बीओआई वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

जून, 2024

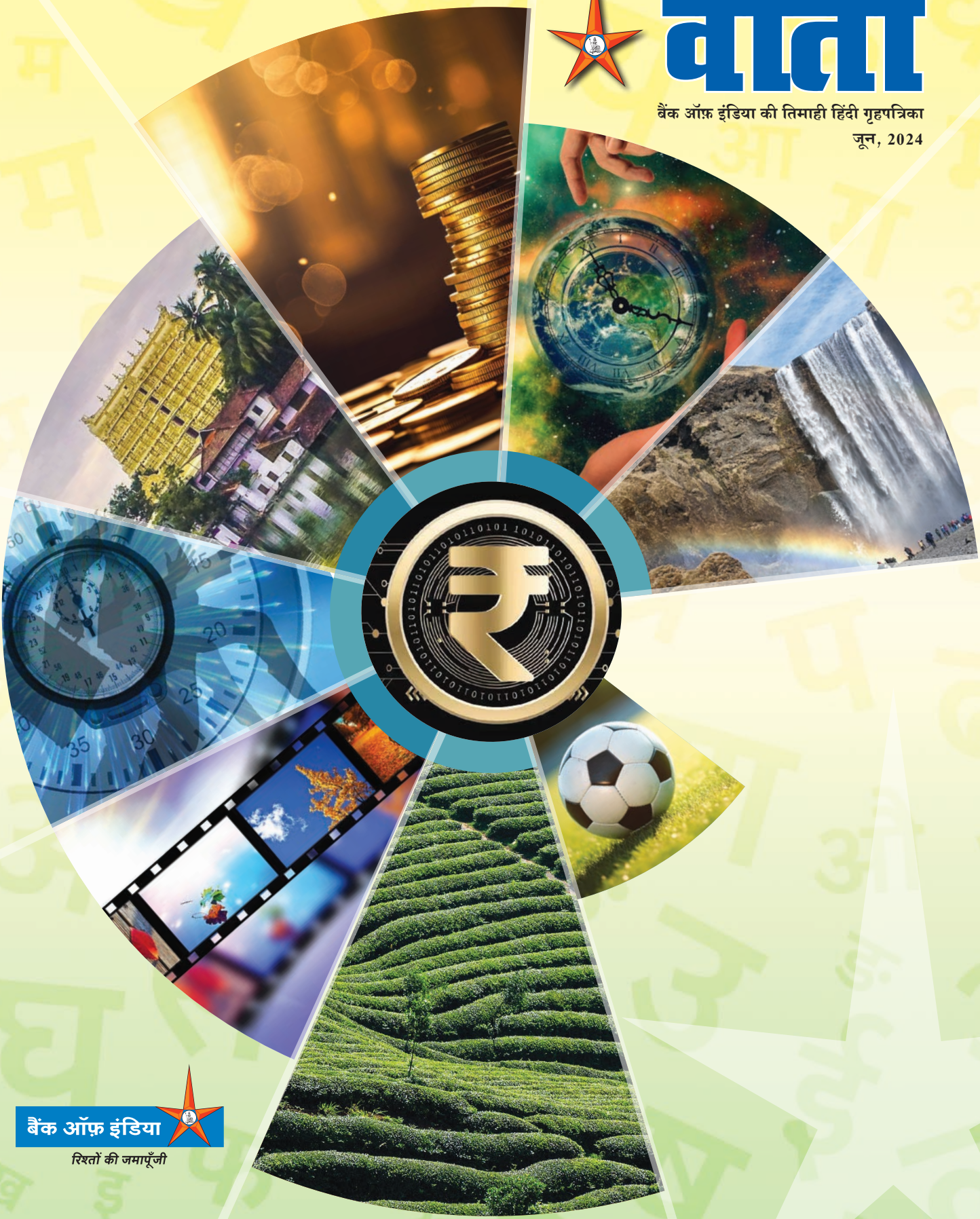

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

कहानियाँ पढ़ने से बचपन सा आनंद, काव्य पढ़ने से युवाओं सा उत्साह और निबंध पढ़ने से प्रौढ़ सा अनुभव मिलता है। इसलिए कुछ न कुछ पढ़ते रहें।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

प्रधान कार्यालय में माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक जी की अध्यक्षता में दिनांक 24.05.2024 को आयोजित बैंक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में हमारे बैंक के सभी कार्यालयों एवं शाखाओं के लिए **'हिन्दी कार्ययोजना पुस्तिका 2024-25'** का विमोचन माननीय एमडी एवं सीईओ महोदय ने कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार, कार्यपालक निदेशक श्री राजीव मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक श्री अभिजीत बोस, महप्रबंधक श्री बिश्वजित मिश्र एवं सभी मुख्य महाप्रबंधकों एवं महाप्रबंधकों की उपस्थिति में किया गया।

प्रधान कार्यालय में माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक जी की अध्यक्षता में दिनांक 24.05.2024 को आयोजित बैंक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में हमारे बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका **'बीओआई वार्ता'** के मार्च 2024 अंक का विमोचन माननीय एमडी एवं सीईओ महोदय ने कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार, कार्यपालक निदेशक श्री राजीव मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक श्री अभिजीत बोस, महप्रबंधक श्री बिश्वजित मिश्र एवं सभी मुख्य महाप्रबंधकों एवं महाप्रबंधकों की उपस्थिति में किया गया।

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक

श्री राजीव मिश्रा

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री बिश्वजित मिश्र

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. पीयूष राज, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री दिव्यांश मिश्र, अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

फोटो क्रेडिट: pixabay.com

विषय-सूची

अपने विभाग को जानिए : डिजिटल लैंडिंग विभाग 07

सीबीडीसी: भारतीय अर्थव्यवस्था में क्रांति के नए युग की शुरुआत 10

देश में बैंकिंग का भविष्य 12

यात्रा वृत्तांत : एक सफर, चाय के बागानों की तरफ..... 15

लघुकथा : वक़्त 17

आर्थिक विकास एवं महंगाई: प्रबंधन एवं चुनौतियाँ 19

अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें 25

खुशहाल ज़िंदगी 29

मैदान: भारतीय फुटबाल का सुनहरा युग और पश्चिम बंगाल में फुटबाल का महत्व 31

रील की शाश्वत कथा 32

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी 34

चित्र काव्य प्रतियोगिता 35

धरोहर : श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर 36

आधुनिक दुनिया 38

कहकहे 40

कविताएं 41

प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

बीओआई वार्ता के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए एक सुखद अनुभव है। वित्तीय वर्ष 2024- 25 की पहली तिमाही में हम इस वर्ष के लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग पर प्रशस्त हो चुके हैं। दूसरी तिमाही में हम सभी बैंक का 119वां स्थापना दिवस मनाते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर चलते रहने का संकल्प लेते हैं। मेरा मानना है कि समय के साथ हमें अपनी कार्यप्रणालियों को सुधारते हुए तथा अगली पीढ़ी की उन्नत प्रौद्योगिकी को अपनाते हुए आगे बढ़ना चाहिए ताकि हमारा उत्थान स्थायी बना रहे। बैंकिंग उद्योग हमेशा से चुनौतीपूर्ण एवं प्रतिस्पर्धात्मक रहा है। कालखंड के अनुसार क्रेडिट के तौर तरीके, जोखिम के प्रकार, संव्यवहारों का स्वरूप निरंतर बदलता रहता है और हम सभी को इन बदलावों के लिए सदैव खुद को तैयार रखना है। मेरा यह मानना है कि टर्न अराउंड टाइम को न्यूनतम करना हमारे लिए सबसे बडी चुनौती और अवसर दोनों है। इस डिजिटलीकरण के युग में ग्राहकों की अपेक्षा सेवाओं की तत्काल उपलब्धता है। इसलिए आपकी सक्रियता, दक्षता एवं कार्यकुशलता पर ही बैंक की प्रगति निर्भर करती है। बैंक के हर क्षेत्र विशेष में कार्य कर रहे स्टाफ को अपने कौशल एवं ज्ञान में निरंतर बढ़ोतरी करते रहना है। इसके साथ ही सभी शाखाओं द्वारा माह-दर-माह, तिमाही-दर-तिमाही अपने कारोबारी लक्ष्यों को प्राप्त करने से ही हम बैंक के कॉर्पोरेट लक्ष्य की प्राप्ति कर सकेंगे।

विविध भाषाओं से अलंकृत हमारे भारत देश में हिन्दी भाषा सबको जोडने वाले धागे की भूमिका निभा रही है। बैंकिंग कामकाज में हम स्थानीय भाषाओं और हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रेरित करते हैं। आप अपने विचारों और अनुभवों को हिन्दी की इस गृह पत्रिका के माध्यम से साझा करते रहते हैं। यह पत्रिका हमारे बैंक में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की प्रगति दिखाने वाला दर्पण है। मैं इस पत्रिका में लिखने वाले सभी प्रतिभा सम्पन्न स्टाफ सदस्यों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि हमारे बैंक के समस्त स्टाफ सदस्य अपने स्तर पर ग्राहक उन्मुख बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाते हुए कारोबार के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे तथा बाज़ार में बैंक की साख को और मजबूती देंगे।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

रजनीश

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

"बीओआई वार्ता" के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का यह अंक जून 2024 तिमाही के दौरान बैंक में आयोजित हुई गतिविधियों और आपके अनुभवों एवं विचारों से सराबोर साहित्य को समाहित किए हुए है। वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही अनेक प्रकार से विशेष होती है। इसमें अनेक त्योहार और उत्सव मनाने का अवसर मिलता है। पहली तिमाही में पदोन्नति के परिणाम जारी किए जाते हैं एवं स्थानांतरण किए जाते हैं। मैं इस वर्ष पदोन्नत होने वाले सभी स्टाफ सदस्यों को बधाई देता हूँ एवं नए स्थानों पर तैनाती पाने वाले स्टाफ सदस्यों को उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। हमारी सालभर की मेहनत के बाद जब उम्मीद के अनुसार वित्तीय परिणाम घोषित होते हैं तो एक नई ऊर्जा और हमारे प्रतिस्पर्धी बैंकों से अच्छा प्रदर्शन करने की इच्छा, हमें लगन और दृढ़ संकल्प से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है। हमारे लिए यह बहुत ही आनंददायक अनुभव है कि हमारा बैंक कारोबार वृद्धि में नित नई उपलब्धियों को अर्जित कर रहा है। हम सभी ने अपनी-अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार गुड़ी पड़वा, ईद-उल-फ़ितर, बाबा साहब डॉ. बी.आर. अंबेडकर जी की जयंती, राम नवमी, महावीर जयंती और बुद्ध पुर्णिमा के उत्सवों को हर्षोल्लास के साथ मनाया है।

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। "बीओआई वार्ता" हमारे बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका होने के कारण स्टाफ सदस्यों के अनुभवों, उद्गारों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देने का कार्य करती है। हिन्दी हमारी राजभाषा है और हमें अपने कामकाज में स्वदेशी भाषाओं के उपयोग को ही वरीयता देनी चाहिए। मेरे विचार से अधिक से अधिक स्टाफ सदस्यों को गृहपत्रिकाओं में लिखना चाहिए ताकि फील्ड के अनुभवों और विचारों से हम सभी नियमित रूप से अवगत होते रहें और साहित्यिक रचनाओं जैसे यात्रा वृतांत, पुस्तक समीक्षा, कहानी आदि को पढ़कर मन-मस्तिष्क को रिफ्रेश कर सकें।

आप सभी से वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए आग्रह करता हूँ। इस तिमाही में आने वाले महत्वपूर्ण दिवसों- स्वतन्त्रता दिवस, बैंक के स्थापना दिवस आदि के लिए स्टार परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "बीओआई वार्ता" का जून 2024 तिमाही का यह नया अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। पाठकों की प्रतिक्रियाओं से हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'विश्व हिन्दी दिवस' पर प्रकाशित पिछला विशेषांक पाठकों को पसंद आया है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका के रूप में "बीओआई वार्ता" के माध्यम से हमारा कर्त्तव्य राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु स्टाफ सदस्यों को प्रेरित करना और जनसाधारण को उपलब्ध कराई जाने वाली बैंकिंग सेवाओं में सुधार संबंधी साहित्य निर्माण को प्रोत्साहन देना है। अपने इस दायित्व का निर्वहन करने के लिए हम पत्रिका में नई-नई पहलों को अपनाते हैं। पिछले अंक से हमने चित्र काव्य प्रतियोगिता की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत हमें अनेक प्रतिभागियों से प्रविष्टियाँ मिली। इस अंक से हम भारत की सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक विरासत से संबंधित 'धरोहर' नाम से एक नए स्तम्भ की शुरुआत कर रहे हैं।

पत्रिका के इस नए अंक में नियमित स्तंभ लेखों के अलावा बैंकिंग, संस्कृति, साहित्य, पुस्तक समीक्षा, कहानी और काव्य आदि का अनूठा समागम है। पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाएँ संपादक मण्डल को अधिक ऊर्जा प्रदान करती हैं। हमारा प्रबुद्ध शीर्ष प्रबंधन हमें निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे संपादकीय टीम का मनोबल बढ़ता है। हम "बीओआई वार्ता" में विभिन्न विषयों पर सृजनशील साहित्य भेजने वाले स्टाफ सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं।

उम्मीद करता हूँ कि "बीओआई वार्ता" का यह नया अंक भी पाठकों को पसंद आएगा। इस अंक के बारे में आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएँ पाने की हमें हार्दिक अभिलाषा है। आपके बहुमूल्य विचार ही हमें और अधिक सृजनशील बनाने के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। अत: आप अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करवाएँ।

भवदीय,

बिश्वजित मिश्र

(बिश्वजित मिश्र)

डिजिटल लैंडिंग विभाग

धीरज कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
डिजिटल लैंडिंग विभाग
प्रधान कार्यालय

प्रधान कार्यालय में महाप्रबंधक की देखरेख में डिजिटल लैंडिंग विभाग कार्यरत है। बैंक में अनेक ऋण उत्पादों को डिजिटल माध्यम से उपलब्ध करवाने का कार्य डिजिटल लैंडिंग विभाग द्वारा किया जाता है। डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के भारत सरकार के प्रयासों को ध्यान में रखते हुए हमारे बैंक ने भी ईज़ कार्यक्रम के तहत डिजिटल लैंडिंग उत्पादों की रेंज बाजार में लॉंच की है। हमारे बैंक के डिजिटल लैंडिंग प्लेटफॉर्म पर किसान क्रेडिट कार्ड, गोल्ड लोन, एमएसएमई हेतु मुद्रा ऋण, रिटेल ग्राहकों के लिए पर्सनल लोन आदि ऋण उत्पादों को ग्राहकों के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। डिजिटल लैंडिंग के तहत बैंक ग्राहकों को स्ट्रेट थ्रू प्रोसैस के जरिए सीधे ऋण राशि उनके खातों में हस्तांतरित करता है। बैंक डेयरी ऋण, ऑटो ऋण, बड़े एमएसएमई ऋण जैसे डिजिटल लैंडिंग उत्पादों की रेंज भी शुरू करने की प्रक्रिया में है, इनमें भी स्ट्रेट थ्रू प्रोसैस द्वारा 'एंड टु एंड प्रक्रिया' को डिजिटली अर्थात न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के ऋण की स्वीकृति प्रदान की जाएगी। डिजिटल लैंडिंग में आवेदन करने के पश्चात डाटा सत्यापन करने से लेकर क्रेडिट मूल्यांकन करके ऋण स्वीकृति प्रदान करते हुए ऋण संवितरण तक की प्रक्रिया को डिजिटली अंजाम देने की कार्रवाई की जाती है। अपने विभाग को जानिए स्तंभ के अंतर्गत 'डिजिटल लैंडिंग विभाग' के बारे में इस लेख में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई है।

डिजिटल लैंडिंग ऋण उपलब्ध करवाने की एक ऐसी प्रकिया है जिसके माध्यम से ऋण देने वाले संस्थान (जैसे- बैंक, एनबीएफ़सी, वित्तिय संस्थान या डिजिटल प्लेटफार्म) इंटरनेट के माध्यम से उधारकर्ताओं को ऋण उपलब्ध करवाते हैं। यह प्रकिया पारंपरिक ऋण प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक तेज, सरल और सुविधाजनक होती है। यह मुख्यत: एक रिमोट और आटोमेटेड लैंडिग-प्रक्रिया है जो ग्राहक अर्जन, ऋण मूल्यांकन, ऋण अनुमोदन, संवितरण, वसूली और संबद्ध ग्राहक सेवाओं के लिए प्रवाहमयी डिजिटल लैंडिंग तकनीकों का उपयोग करती है। डिजिटल लैंडिंग के अंतर्गत ऋण उपलब्ध करवाने की प्रक्रिया क्रमानुसार निम्नवत है:

आवेदन प्रक्रिया: उधारकर्ता अपनी आवश्यकता के अनुसार एक डिजिटल लैंडिंग प्लेटफार्म पर ऑनलाइन आवेदन करता है। इस आवेदन पत्र में उधारकर्ता की व्यक्तिगत जानकारी, आय विवरण और अन्य अपेक्षित विवरण शामिल होते हैं।

डाटा सत्यापन: आवेदन करने की प्रक्रिया के दौरान प्लेटफॉर्म उधारकर्ता की जानकारी को सत्यापित करता है। इसके लिए केवाईसी और अन्य सत्यापन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है, जिसमें आधार, पैन, उद्यम, जीएसटीएन आदि का उपयोग होता है। ग्राहक की स्वीकृति के उपरांत प्लेटफार्म एपीआई की तकनीक का उपयोग करते हुए, इस डाटा के सत्यापन के लिए एनएसडीएल या केवाईसी जारी करने वाले संस्थान को आवेदन भेजता है और इसके रिस्पोंस में रिवर्स एपीआई से प्रमाणपत्र जारीकर्ता संस्थान डाटा को सत्यापित करता है जो कि पूर्ण रूप से गोपनीय और सुरक्षा मानकों के अनुरूप होता है। यह मुख्यत: ओटीपी आधारित प्रक्रिया होती है, जिसमें उधारकर्ता द्वारा ओटीपी सत्यापन के बाद ही यह प्रक्रिया पूरी की जा सकती है।

क्रेडिट मूल्यांकन: इस चरण में उधारकर्ता की क्रेडिट हिस्ट्री और वर्तमान वित्तिय स्थिति का मूल्यांकन किया जाता है। इसके लिए क्रेडिट स्कोर और अन्य वित्तिय डाटा का विश्लेषण किया जाता है। बैंक या वित्तिय संस्थान अपने क्रेडिट पॉलिसी या डिजिटल लैंडिग पॉलिसी और मानकों के अनुरुप 'गो/नो गो' मानदंड और 'बिज़नेस रूल इंजिन' का निर्धारण करते हैं जिसमें वस्तुत: उधारकर्ता की

उम्र, अनुभव, क्रेडिट हिस्ट्री, ब्यूरो स्कोर, आश्रितों की संख्या, बैंक खातों में लेन देन, इंडस्ट्री के नोर्म्स व अन्य कसौटियों पर उधारकर्ता का मूल्यांकन किया जाता है। अगर उधारकर्ता गो/नो गो मानदंड को पूरा करता है और बिज़नेस रूल इंजिन एवं निर्धारित नियमों के अनुसार न्यूनतम पात्रता अंक प्राप्त करता है तभी आवेदन अगले स्टेज तक जाने के लिए उपयुक्त पाया जाता है अन्यथा उधारकर्ता का आवेदन इसी स्टेज पर निरस्त हो जाता है।

ऋण स्वीकृति: मूल्यांकन के उपरांत अगर उधारकर्ता पात्र पाया जाता है, तो ऋण राशि और शर्तों के साथ उधारकर्ता को प्रस्ताव दिया जाता है। यदि उधारकर्ता शर्तों को स्वीकार करता है तो ऋण को स्वीकृत कर दिया जाता है।

संवितरण: ऋण स्वीकृति के उपरांत दस्तावेजों को डिजिटली निष्पादित करने की प्रक्रिया होती है जिसमें उधारकर्ता उपयुक्त स्टांप ड्यूटी का आनलाइन भुगतान करने के बाद बैंक द्वारा प्रस्तावित प्रतिभूति दस्तावेज़ों को ऑनलाइन मोड में ही हस्ताक्षरित करता है। जिसके बाद ऋण की राशि उधारकर्ता के खाते में हस्तांतरित कर दी जाती है। यह प्रक्रिया आमतौर पर बहुत कम समय में पूरी हो जाती है।

ऋण चुकौती: उधारकर्ता को निर्धारित समय और शर्तों के अनुसार ऋण की चुकौती करना होता है और इसके लिए डिजिटल भुगतान के विकल्पों जैसे ई-नाच का उपयोग किया जाता है। डिजिटल लैंडिंग के महत्वपूर्ण घटक और अवयवों में मुख्यत: डीएलए (डिजिटल लैंडिंग ऐप्स या प्लेटफार्म) होते हैं जो यूजर इंटरफेस वाले मोबाइल या वेब बेस्ड ऐप्लीकेशन होते हैं जो डिजिटल लैंडिंग सर्विस को सरलीकृत करते हैं। इसमें विनियमित एंटिटियों के ऐप्स भी शामिल होते हैं। और इसके आलावा उन लैंडिंग सेवा प्रदाताओं द्वारा परिचालित ऐप्स भी शामिल हैं जिन लैंडिंग सेवा प्रदाताओं को रिज़र्व बैंक के आउटसोर्सिंग दिशानिर्देशों के अनुरूप विनियमित एंटिटियों द्वारा शामिल किया गया है।

डिजिटल लैंडिंग की प्रकिया पूरी तरह से आनलाइन होती है जिससे समय और श्रम की बचत होती है। उधारकर्ता को कहीं से भी और कभी भी आवेदन करने की सुविधा मिलती है। डिजिटल लैंडिंग में पारंपरिक ऋण प्रक्रिया की तुलना में लागत कम आती है क्योंकि इसमें कागजी कार्रवाही और मानवीय हस्तक्षेप की न्यूनतम आवश्यकता होती है। आवश्यक दस्तावेजों को ऑनलाइन अपलोड करना होता है या विभिन्न डिजिटल सेवाओं का उपयोग करके दस्तावेज ऑनलाइन ही फ़ेच कर लिया जाता है और सत्यापन भी ऑनलाइन मोड में ही कर लिया जाता है, जिससे दस्तावेजीकरण की प्रकिया आसान हो जाती है और शीघ्र ही पूरी कर ली जाती है।

बैंक ने डिजिटल ऋण उत्पादों के अंतर्गत वित्त वर्ष 2023-24 में रु.15516 करोड़ का नया कारोबार जुटाया है। पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान, बैंक ने डिजिटल ऋण कार्रवाई के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए फिनटेक के साथ भागीदारी की है। बैंक प्रायोगिक तौर पर मध्य प्रदेश राज्य के भूमि रिकॉर्ड, उपग्रह आधारित फसल पैटर्न और फसल की हिस्ट्री को प्राप्त करने, प्रायोगिक तौर पर गुजरात राज्य के अमूल सोसाइटी के लिए दूध उत्पादन का डेटा और आय से संबंधित डेटा प्राप्त करने, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य के लिए केसीसी, जन समर्थ के लिए सीधी कार्रवाई, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत सोलर रूफटॉप पैनल के लिए डिजिटल कार्रवाई, पीएम कृषि उपज निधि के तहत ई-एनडब्ल्यूआर वित्तपोषण, जीएसटी आधारित ऋण के लिए डिजिटल उत्पाद, मंजूरी-पूर्व व्यक्तिगत ऋण और मंजूरी-पूर्व व्यवसाय ऋण की सेवाओं का उपयोग कर रहा है। डिजिटल लैंडिंग विभाग कैप्स उत्पादों को ई-प्लेटफॉर्म में स्थानांतरित करके मौजूदा सीएपीएस सॉफ्टवेयर को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने की भी योजना बना रहा है। विभाग सोशल मीडिया पर डिजिटल उत्पादों को बढ़ावा दे रहा है। मार्केटिंग टीम/डिजिटल लैंडिंग चैंपियंस को व्यक्तिगत ऋण और केसीसी ऋण जैसे ऋणों को मंजूरी देने के लिए त्वरित कार्रवाई हेतु लैपटॉप और टैबलेट प्रदान किए गए हैं। यह स्वचालित प्रक्रिया के समय को कम करेगा और ग्राहकों को यथासमय मंजूरी प्रदान करेगा।

अंचल, एसकेवीके, आरबीसी और शाखाओं को डिजिटल उत्पादों पर नियमित प्रशिक्षण सत्र प्रदान किए जा रहे हैं। तकनीकी समस्याओं के लिए टर्नअराउंड समय को कम करने के लिए

सहायता टीम बनाई गई है। बैंक के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के लिए डिजिटल ऋण देने वाले चैंपियन और क्षेत्र के पदाधिकारियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं को कार्रवाई हेतु नोट किया गया है। वेब उत्पादों की अधूरी कार्रवाई को पूरा करने के लिए ग्राहकों को सहायता प्रदान करने के लिए एक अलग उत्पाद टीम बनाई गई है। टीआरईडीएस कई फाइनेंसरों के माध्यम से एमएसएमई को व्यापार प्राप्तियों के वित्तपोषण/बट्टे की सुविधा के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है। बैंक ऑफ इंडिया सभी टीआरईडीएस प्लेटफॉर्म पर एक सक्रिय भागीदार है और वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान इन प्लेटफॉर्म पर टीआरईडीएस व्यवसाय के समग्र थ्रूपुट के 7.9% बाजार हिस्सेदारी का लाभ बैंक को मिला है। हमारे बैंक के पास टीआरईडीएस कारोबार को बढ़ाने के लिए पर्याप्त क्षमता उपलब्ध है क्योंकि कई कॉर्पोरेट खरीददार अभी भी नामांकित नहीं है या प्लेटफार्मों पर सक्रिय नहीं है। बैंक का टीआरईडीएस व्यवसाय चालू वित्तीय वर्ष में अच्छी गति से बढ़ने की उम्मीद है। वर्तमान में, विभाग ने एमएसएमई और खुदरा उत्पादो के तहत सह-उधार देने के लिए विभिन्न एनबीएफसी के साथ समझौता किया है। इस उत्पाद को नया रूप दिया गया है और उद्योगों के साथ नए ताल-मेल की खोज की जा रही है। हम ताल-मेल बढ़ाकर और चालू वित्त वर्ष में डिजिटल सोर्सिंग भागीदारों को शामिल करके आपूर्ति श्रृंखला वित्तपोषण के तहत कारोबार को बढ़ाने का लक्ष्य रखते हैं।

डिजिटल लैंडिंग प्लेटफॉर्म तेजी से आवेदन को प्रोसेस करते हैं और क्रेडिट अंडरराइटिंग भी यूनिफॉर्म होती है तथा इसकी गुणवत्ता भी बेहतर होती है तथा दस्तावेजों के डिजिटल निष्पादन से दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रिया शीघ्र ही पूरी हो जाती है। उधारकर्ताओं को कई तरह के विकल्प मिलते है और उन्हें चुनाव करने की वास्तविक आज़ादी भी मिलती है। ग्राहक अपने बैंक के अलावा अन्य बैंकों व वित्तीय संस्थाओं में आवेदन करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। अकाउंट एग्रीगेटर व अन्य कई तरह की नई तकनीकों के अभ्युदय से यह प्रक्रिया सही अर्थों में सीमलेस हो गई है। डिजिटल लैंडिंग ने वित्तीय क्षेत्र में क्रांति ला दी है जिससे उधारकर्ता और ऋणदाता दोनों को लाभ हो रहा है।

उलटी चप्पलें

घर के सामने बरामदे में आज फिर से दिखा,
वही नादां-सा बच्चा, हैरान-सा, परेशान-सा,
उसकी परेशानी का सबब वही चप्पलें हैं,
जो न जाने कैसे अपने आप उलटी हो जाती हैं।

जब से उसने सुना है, चप्पलें होती हैं वजह, सभी झगड़ों की,
अनेक प्रयोजनों के साथ, वह तो हमेशा सतर्क ही रहता है,
काश वो ठीक कर पाता, हर बरामदे, हर आयोजन स्थल,
हर मंदिर के बाहर इन बिखरी हुई चप्पलों को।

काश वह समझा पाता सबको माँ का बताया, आसान-सा नुस्खा,
जिससे सुलझ जाती लोगों की तमाम उलझनें,
जिससे ढह जाती नफरत की सभी दीवारें,
जिससे टूट जाती द्वेष और अहंकार की चट्टानें।

उसे फिर ना देखने पड़े वही तमतमाते हुए चेहरे,
और ना सुननी पड़े मासूमों की दुखभरी चीखें,
वह बनाता है योजनाएं भविष्य की, मन ही मन, अपनी दुनिया में,
मैं अपनी दुनिया में सिर्फ अफसोस करता हूं,
उसके भ्रम के टूट-जाने का।

किसी उम्मीद के खातिर या मेरी बेबसी कह लो,
चप्पलों को तरतीब से रखने की नसीहत, अब मैं भी देता हूं,
शायद सभी झगड़ों का कारण यह बिखरी हुई चप्पलें ही होती हों,
घर के बरामदे में खड़े होकर, यही कई बार सोचता हूं।।

नितेश झा
नाला सोपारा शाखा
मुंबई उत्तर अंचल

सीबीडीसीः भारतीय अर्थव्यवस्था में क्रांति के नए युग की शुरुआत

लक्ष्मी पासवान
राजभाषा अधिकारी
बारासात अंचल

लगभग 100 से अधिक देश डिजिटल मुद्रा के कार्यान्वयन पर कार्य कर रहे हैं। इनमें से अनेक तो शोध, विकास, पायलट टेस्टिंग और पूर्णत: लॉंच के स्तरों पर पहुँच चुके हैं। चीन का डिजिटल युआन अनेक शहरों में व्यापक रूप से लेनदेन के लिए उपयोग किया जा रहा है, नाइजीरिया का ई-नाइरा और बहामास का सैंड डॉलर भी परिचालन में आ चुका है। आजकल, डिजिटल मुद्रा का विचार भारतीय अर्थव्यवस्था में भी एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बन गया है। केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (सीबीडीसी) की अवधारणा और उसकी संभावित भूमिका भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक नए युग की शुरुआत जैसा है। हमें डिजिटल मुद्रा की वर्तमान स्थिति, उसकी संभावनाओं और भारतीय अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभावों की जानकारी होना आवश्यक है ताकि हम स्वयं नए जमाने की मुद्रा के प्रयोग को समझ सकें।

डिजिटल मुद्रा, जिसे डिजिटल रुपया भी कहा जा सकता है, एक ऐसी मुद्रा है जिसे डिजिटल प्रारूप में जारी किया जाता है और जिसे केवल इलेक्ट्रॉनिक रूप में ही उपयोग किया जा सकता है। केंद्रीय बैंक द्वारा जारी की जाने वाली यह मुद्रा पारंपरिक मुद्रा की तरह ही होती है, लेकिन इसका लेनदेन भौतिक रूप में नहीं किया जा सकता।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने डिजिटल मुद्रा के विकास और परीक्षण के लिए अनेक पहलकदमियां की हैं। वर्तमान में, पायलट परियोजनाओं के माध्यम से डिजिटल मुद्रा की तकनीकी और परिचालनगत संभावनाओं का मूल्यांकन किया जा रहा है। केंद्रीय बैंक ने इसके लिए एक व्यापक ढांचा तैयार किया है, जिसमें विभिन्न वित्तीय संस्थान, तकनीकी विशेषज्ञ और सरकार आपसी सामंजस्य के साथ कार्य कर रहे हैं।

डिजिटल मुद्रा के लाभ

संव्यवहारों में पारदर्शिता: डिजिटल मुद्रा का उपयोग वित्तीय लेनदेन को अधिक पारदर्शी बनाता है। सव्यवहारों का रिकॉर्ड एक ऐसी डिजिटल बही में सेव होता है जहां से उसमें छेड़छाड़ करना बहुत कठिन है। हर एक संव्यवहार पिछले संव्यवहार से जुड़ा होता है जो लेनदेनों की ट्रेल बनाता है। इससे भ्रष्टाचार और काले धन की समस्या को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है।

संव्यवहार में अधिक सुविधा: चूंकि भौतिक मुद्रा के अंतरण की भांति डिजिटल मुद्रा में हस्तांतरण या अन्य पक्षों की आवश्यकता नहीं होती है इसलिए डिजिटल मुद्रा के उपयोग से लेनदेन तेजी से और आसानी से हो सकते हैं। कोई भी व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से तत्काल लेनदेन कर सकता है। इससे व्यापारिक गतिविधियाँ सुचारू हो जाएंगी और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

लागत में कमी: भौतिक मुद्रा के मुद्रण, परिवहन और संरक्षण में भारी खर्च होता है। डिजिटल मुद्रा इन खर्चों को कम करने में सक्षम होगी। भौतिक मुद्रा का क्षय बहुत तीव्रता से होता है और प्राकृतिक आपदाओं में जलने, डूबने, दब जाने से भी मुद्रा का नुकसान होता है जो डिजिटल मुद्रा के मामले में संभव नहीं है। हालांकि साइबर सुरक्षा के लिए डिजिटल मुद्रा पर अतिरिक्त व्यय अपेक्षित है लेकिन फिर भी भौतिक मुद्रा के मुक़ाबले डिजिटल मुद्रा पर प्रशासनिक लागत कम आती है।

डिजिटल मुद्रा की संभावित चुनौतियाँ

साइबर सुरक्षा: डिजिटल मुद्रा की सुरक्षा सुनिश्चित करना

एक बड़ी चुनौती है। साइबर हमलों और धोखाधड़ी की संभावनाओं को नियंत्रित करना बहुत महत्वपूर्ण एवं जरूरी है। साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए न केवल तकनीकी उपाय करने होंगे अपितु उपयोगकर्ताओं को भी शिक्षित करना होगा। डिजिटल मुद्रा का कार्यान्वयन एक पेचीदा मामला है क्योंकि इसके परिचालनगत, तकनीकी एवं नियामकीय पहलुओं का सामंजस्य बैठना अपने आप में एक बड़ी चुनौती होती है। इसके ऊपर एक बड़ा साइबर हमला पूरी अर्थव्यवस्था के लिए जोखिम पैदा कर सकता है।

तकनीकी बुनियादी ढाँचे का विकास: डिजिटल मुद्रा को व्यापक रूप से अपनाने के लिए मजबूत तकनीकी बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होगी। इसके लिए बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता हो सकती है। जैसे-जैसे डिजिटल मुद्रा के उपयोगकर्ताओं की संख्या में इजाफा होगा और अंतराष्ट्रीय संव्यवहारों में इसका प्रयोग बढ़ेगा, इसके लिए तकनीकी उपाय सुनिश्चित करना अपेक्षित हो जाएगा।

वित्तीय समावेशन: डिजिटल मुद्रा का उपयोग करने के लिए सभी नागरिकों को तकनीकी ज्ञान और संसाधनों की आवश्यकता होगी। ग्रामीण और कम शिक्षित जनसंख्या के लिए इसे अपनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, साथ ही भौतिक मुद्रा की भांति डिजिटल मुद्रा को भरोसा कायम करने में वक्त लगेगा। साहूकारी/ सूदखोरी जैसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले देश में नकदी का मोह छुड़वाना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है।

मौद्रिक नीति: महंगाई जैसे अर्थव्यवस्था के अनेक पहलुओं को नियंत्रित करने वाले उपकरण के रूप में मौद्रिक नीति अहम भूमिका निभाती है। डिजिटल मुद्रा का पूर्ण परिचालन शुरू करने से पहले मौद्रिक नीति की मदों पर इसके प्रभावों का जायज़ा लेना बहुत जरूरी है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डिजिटल मुद्रा के आगमन से भारतीय अर्थव्यवस्था में कई सकारात्मक परिवर्तन हो सकते हैं। यह वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दे सकता है और डिजिटल इंडिया की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। इसके अलावा, डिजिटल मुद्रा के उपयोग से मुद्रा नीति का प्रबंधन अधिक प्रभावी हो सकता है और आर्थिक स्थिरता में सुधार हो सकता है। अत: डिजिटल मुद्रा भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। इसके फायदे और चुनौतियाँ दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सही योजना और निष्पादन के माध्यम से इन चुनौतियों को पार किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक और सरकार के संयुक्त प्रयासों से डिजिटल मुद्रा का सफल कार्यान्वयन भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दे सकता है और उसे वैश्विक मंच पर मजबूती से खड़ा कर सकता है और भारत में डिजिटल लेनदेन में केवल यूपीआई की आंकड़ों की बात की जाएँ तो भारत ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में 100 बिलियन से अधिक लेनदेन दर्ज किए, जो इसका विशाल उपयोग और लोकप्रियता दर्शाता है। यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है, जिससे भारत दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल भुगतान बाजारों में से एक बन गया है।

बेटी

बेटी, शब्द से ही चेहरे पर मुस्कान आ जाती है,
उसकी एक मुस्कान सब परेशानियों को मिटा देती है,
अक्सर पूछते थे लोग कि तुम्हें बेटा चाहिए या बेटी,
गर्व से कहती थी कि दुआ करती हूँ हो जाए बेटी।

जिस दिन दुनिया में वो आई, ईश्वर को दिल से धन्यवाद किया,
कितनी खुशनसीब हूँ मैं, यह सोचकर मन बहुत खुश हुआ,
अभी बहुत छोटी हो तुम, बड़ा होने में वक्त नहीं लगेगा,
छोटा-सा है सफर साथ तुम्हारे, यही ख्याल दुखी करेगा।

जीवन में खुश रहना और खूब तरक्की करना यही दुआ है मेरी,
ख़्वाहिश है कि तुम्हारे नाम से हो पहचान दुनिया में मेरी,
हमें छोड़ चली जाओगी ससुराल, यही सोचकर मैं मायूस हो जाती,
बेटियाँ होती हैं पराया धन, काश दुनिया की ये रीत मैं बदल पाती।

डिम्पल गंगानी
अधिकारी
न्यू राणिप शाखा
अहमदाबाद अंचल

देश में बैंकिंग का भविष्य

धर्मराज चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग
आंचलिक कार्यालय
जयपुर

भारत का इतिहास सदैव इस बात का साक्षी रहा है कि जब भी भारत देश ने किसी क्षेत्र विशेष पर ध्यान केंद्रित किया है तो उस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करते हुए उसे हुये देश के विकास के लिए सहायक बनाया है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, इसरो, सूचना प्रौद्योगिकी इसके उदाहरण हैं। इसी क्रम को जारी रखते हुए भारतीय बैंकिंग सेक्टर ने वित्तीय साक्षरता में अद्भुत प्रगति की है और इसका भविष्य और भी उज्ज्वल है। विभिन्न कारकों ने इस क्षेत्र को नई दिशा देने में मदद की हैं, जिससे आर्थिक समृद्धि बढ़ी है। अब भारत में बैंकिंग के भविष्य पर विस्तारपूर्वक विचार करते हैं।

• **डिजिटल बैंकिंग** : भारतीय बैंकिंग सेक्टर में डिजिटल बैंकिंग का प्रगतिशील रूप से विकास हो रहा है। बैंक ग्राहकों को इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल वालेट्स के माध्यम से सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। यह सुनिश्चित करता है कि लोग अपने आर्थिक लेन-देनों को सरलता से प्रबंधित कर सकते हैं और बैंकिंग सुविधाओं का सरल और त्वरित उपयोग कर सकते हैं।

• **फिनटेक इनोवेशन** : फिनटेक इनोवेशन भविष्य में बैंकिंग सेक्टर को नई ऊंचाईयों तक पहुंचा सकता है। आपूर्ति श्रृंखला, ब्लॉकचेन और एमएल नेटवर्किंग जैसी तकनीकों का उन्नयन करके बैंकिंग प्रक्रियाओं को और भी सुरक्षित और अच्छी तरह से संचालित किया जा सकता है। इससे ग्राहकों को सुरक्षित और आसान तरीके से विभिन्न सेवाएं मिल सकती हैं।

• **रजत शक्ति:** बैंकिंग सेक्टर में महिलाओं की रजत शक्ति को बढ़ावा देना एक महत्वपूर्ण पहलु हो सकता है। अधिक से अधिक महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं तक पहुंचाने और उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए नई योजनाओं और कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

• **स्वास्थ्य बीमा और उसकी चुनौतियां** : बैंकिंग सेक्टर में स्वास्थ्य बीमा की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो लोगों को आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाए रखने में मदद कर सकता है। साथ ही, बैंकिंग संस्थानों को आर्थिक संजीवनी प्रदान करने के लिए नए उत्पादों का विकास करना होगा ताकि वे लोगों को आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सके। भविष्य की बैंकिंग के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण मदें हैं जो इसे और भी सुदृढ़ और प्रभावी बना सकती हैं।

• **आर्थिक समृद्धि की नई दिशा:** भविष्य में बैंकिंग सेक्टर आर्थिक समृद्धि की नई दिशा में बढ़ेगा। बैंक उत्पादों और सेवाओं की नई रचनाएं, निवेश के लिए नए अवसर और विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में विकास के साथ, सामाजिक और आर्थिक समृद्धि में मदद कर सकती हैं।

• **'आधार' आधारित बैंकिंग:** आधार-आधारित बैंकिंग स्वाभाविक रूप से बढ़ रही है। आधार कार्ड का उपयोग करने वाली नई तकनीकों के साथ, लोगों को आसानी से बैंक खाता खोलने और सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा होगी, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

• **नए वित्तीय मॉडल:** भविष्य में नए वित्तीय मॉडलों का उत्थान हो सकता है जो बैंकिंग सेक्टर को संजीवनी प्रदान करेंगे। साझेदारी आधारित समृद्धि, वित्तीय समृद्धि साझा करने वाले उत्पादों और सेवाओं का विकास और संगठनात्मक बैंकिंग तंत्र के माध्यम से लोगों को अधिक समाविष्ट करने की क्षमता रखती है।

• **स्वार्थ निरपेक्षता और सशक्तिकरण:** बैंकिंग क्षेत्र में स्वार्थ निरपेक्षता और सशक्तिकरण का अधिक महत्व होगा। लोगों को अपने आर्थिक निर्णयों पर अधिक नियंत्रण मिलेगा और वे अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सशक्त होंगे।

• **साइबर सुरक्षा:** बैंकिंग सेक्टर के भविष्य में साइबर सुरक्षा

का महत्व और बढ़ेगा। डिजिटल बैंकिंग की वृद्धि के साथ, सुरक्षित बैंकिंग सुनिश्चित करने के लिए नई तकनीकों और प्रक्रियाओं का विकास होगा।

इन मदों के संयोजन से, भारत में बैंकिंग क्षेत्र का भविष्य और भी समृद्धिशाली हो सकता है, जो आर्थिक समृद्धि और लोगों की वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देगा। भारत में भविष्य की तकनीकी बैंकिंग के क्षेत्र में कई उत्साही परिवर्तन लाने की संभावना है। निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं से यह समझा जा सकता है:

• **डिजिटलीकरण और इंटरनेट बैंकिंग:** भारत में तकनीकी बैंकिंग का भविष्य डिजिटलीकरण के माध्यम से है। इंटरनेट बैंकिंग की सुविधाएं और इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन के साधने से लोग अपनी आर्थिक लेन-देन को सुरक्षित और आसानी से प्रबंधित कर सकेंगे।

• **वित्तीय समृद्धि के लिए ब्लॉकचेन:** ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग वित्तीय समृद्धि के क्षेत्र में सुरक्षित और पारदर्शी लेन-देन के सुनिश्चिति करने के लिए किया जा सकता है। यह लोगों को स्वतंत्रता प्रदान करेगा और लेन-देन की प्रक्रिया को सुधारेगा।

• **फिनटेक इनोवेशन:** फिनटेक इनोवेशन के माध्यम से नई और उन्नत वित्तीय सेवाएं लोगों तक पहुंच सकती हैं। नए डिजिटल उत्पादों और सेवाओं के विकास से लोग अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए नए तरीकों का आनंद ले सकते हैं।

• **एमएल नेटवर्किंग:** मशीन लर्निंग और न्यूरल नेटवर्किंग के साथ संगत बैंकिंग सिस्टम लोगों को व्यक्तिगत वित्तीय सलाह और सेवाओं के पेशेवर सुझाव देने में मदद कर सकता है।

• **साइबर सुरक्षा:** तकनीकी बैंकिंग में बढ़ती तकनीकी सुधारों के साथ, साइबर सुरक्षा का महत्व और भी बढ़ेगा। इसके माध्यम से बैंकिंग सिस्टम को हैकिंग और अनुशासनिक खतरों से बचाने के लिए नई और मजबूत सुरक्षा क्रियाएं विकसित की जा रही हैं।

• **बिग डेटा और एनालिटिक्स:** बिग डेटा और एनालिटिक्स का उपयोग खाता धारकों के व्यवहार को समझने, वित्तीय सुझाव देने, और उन्हें बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

भारत में तकनीकी बैंकिंग के समक्ष चुनौतियां और उपाय:

भारत में तकनीकी बैंकिंग के उपयोग का विस्तार हो रहा है, लेकिन इसके साथ ही आने वाले खतरों ने सुरक्षा के मामले में नई चुनौतियां पैदा की हैं। हम भारत में तकनीकी बैंकिंग के खतरों और उनके उपायों पर विचार विमर्श करेंगे।

चुनौतियां

• **साइबर अटैक्स:** साइबर अटैक्स एक महत्वपूर्ण खतरा है जिसका सामना बैंकिंग सेक्टर को करना पड़ रहा है। हैकर्स और फिशिंग अटैक्स से बैंकों के नेटवर्क में अनधिकृत पहुंच बढ़ सकती है जिससे ग्राहकों की वित्तीय और व्यक्तिगत जानकारी को खतरा हो सकता है।

• **आधार से छेड़छाड़:** डिजिटल बैंकिंग में आधार कार्ड का प्रयोग होने के कारण, आधार भ्रष्टता एक और खतरा है जिसका समाधान करना महत्वपूर्ण है। अनधिकृत पहुंच या आधार डेटा की चोरी से लोगों की व्यक्तिगत जानकारी खतरे में पड सकती है।

• **तकनीकी गड़बड़ी:** तकनीकी गड़बड़ी या सिस्टम की खराबी के कारण सेवाओं में अवरुद्धता हो सकती है जिसे लोगों को पहुंचाने में समस्या हो सकती है। तकनीकी सुरक्षा की कमी के कारण लोग वित्तीय संबंधों में आत्मसमर्पण कर सकते हैं।

उपाय:

• **साइबर सुरक्षा की मजबूती:** साइबर सुरक्षा में मजबूती बढ़ाना और नवीनतम सुरक्षा तकनीकों का उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंकों को आगे बढ़ने के लिए अपडेटेड तकनीक का प्रयोग करना चाहिए।

• **जागरूकता और प्रशिक्षण:** ग्राहकों और बैंक कर्मियों को साइबर बचाव के लिए जागरूक बनाए रखना और उन्हें नवीनतम तकनीकी खतरों के बारे में प्रशिक्षित करना महत्वपूर्ण है।

• **आधार सुरक्षा:** आधार की सुरक्षा में सुधार करना और नियमित रूप से आधार कार्ड डेटा की निगरानी रखना आवश्यक है। बैंकों को ग्राहकों की सुरक्षा के लिए सख्त नियमों का पालन करना चाहिए।

रोबोटिक बैंकिंग

रोबोटिक बैंकिंग एक उन्नत तकनीकी परिवर्तन है जो बैंकिंग सेवाओं में रोबोट और एकीकृत सिस्टमों का उपयोग करता है। यह विभिन्न कार्यों को स्वतंत्रता से कर सकता है, जिससे ग्राहकों को बेहतर सेवा और त्वरित निर्णय लेने में मदद मिलती है।

1. वित्तीय सलाह: रोबोटिक बैंकिंग से ग्राहकों को वित्तीय सलाह और निवेश सुझाव सुलभता से मिलती है। रोबोट्स अनुकूलित वित्तीय योजनाओं को जानकर और ग्राहक की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर सुझाव देने में सक्षम होते हैं।

2. त्वरित लोन अनुमोदन: रोबोटिक बैंकिंग से लोग त्वरित रूप से लोन अनुमोदन प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि रोबोट्स त्वरित रूप से ग्राहक की वित्तीय स्थिति को निर्धारित कर सकते हैं और लोन की स्वीकृति प्रदान कर सकते हैं।

3. स्वयंसेवा किया जाना: रोबोटिक बैंकिंग ग्राहकों को बिना किसी मध्यस्थ की मदद के आपकी सेवा करने का सामर्थ्य रखता है, जिससे स्वयंसेवा की सुविधा होती है और लोग अपनी आर्थिक लेन-देन को स्वतंत्रता से प्रबंधित कर सकते हैं।

4. भुगतान सुविधाएं: रोबोटिक बैंकिंग से भुगतान सुविधाएं तेजी से और सुरक्षित रूप से हो सकती हैं। रोबोट्स इंटेलिजेंट रूप से ग्राहकों के भुगतान को स्वीकृति देने में सक्षम होते हैं, जिससे ग्राहकों को सुविधा मिलेगी।

रोबोटिक बैंकिंग एक नया तकनीकी परिवर्तन है जो बैंकिंग उद्योग में हो रहा है। इसमें तकनीकी उपायों और स्वतंत्रता के माध्यम से विभिन्न बैंकिंग प्रक्रियाओं को स्वचालित बनाने का प्रयास किया जा रहा है। रोबोटिक बैंकिंग का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करना है और बैंकिंग प्रक्रियाओं को अधिक दक्ष और दुरुस्त बनाना है। रोबोटिक बैंकिंग बैंकों को स्वतंत्र और सुचारू प्रक्रियाओं की सुविधा प्रदान करता है। यह ग्राहकों को तेज़ और सुरक्षित सेवाएं प्रदान करने में सहायक होता है। रोबोटिक बैंकिंग ने सुरक्षा के क्षेत्र में एक नई मिसाल प्रस्तुत की है। इसमें बायोमैट्रिक्स, आईआरएस और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का उपयोग करके ग्राहकों की निजी जानकारी की सुरक्षा में मदद की जा रही है। रोबोटिक बैंकिंग से ग्राहक सेवा में भी सुधार हुआ है। यह ग्राहकों को 24/7 सेवाएं प्रदान कर सकता है और उनकी समस्याओं को त्वरित और कुशलता से हल किया जा सकता हैं। रोबोटिक बैंकिंग से लोगों की अपेक्षाएं बढ़ रही हैं क्योंकि वे तेजी से और सुधारित सेवाएं चाहते हैं और यह भी सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनकी वित्तीय जानकारी सुरक्षित रहे। अत: भारतीय बैंकिंग का भविष्य उज्जवल हैं।

फुर्सत नहीं

कुछ देखने की फुर्सत नहीं,
कब निहारु मैं इन वादियों को,
इस ज़माने में तो किसी को,
नज़र भर देखने की फुर्सत नहीं।

कुछ सुनने की फुर्सत नहीं,
कब सुनूँ इन चिड़ियों की चहचहाट को,
इस ज़माने में तो किसी को,
सब्र से सुनने की फुर्सत नहीं।

कुछ बोलने की फुर्सत नहीं,
कब बातें करूं मैं इस धरोहर से,
इस ज़माने में तो किसी से,
मन भर बोलने की फुर्सत नहीं।

क्या करुं इस ज़माने में अब,
तो सांस लेने की भी फुर्सत नहीं,
कब मिलु मैं अपनों से अब,
तो खुद से मिलने की फुर्सत नहीं।

भाग्यश्री पाटील
आंचलिक प्रबंधक सचिव
नासिक आंचलिक कार्यालय

एक सफर, चाय के बागानों की तरफ.....

ऋचा डोगरा
प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय
चंडीगढ़

पिको अय्यर ने कहा है - "हम खुद से भागने के लिए यात्रा शुरू करते हैं और अगले ही पल यह यात्रा हमारे स्वयं से मिलन का आधार बन जाती है। हम चल पड़ते हैं दुनिया में वह देखने, जानने और जीने के लिए, जो अखबार और समाचार वाले हमें नहीं दिखा पा रहे होते हैं। वह थोड़ा-सा धान्य समेट लाने के लिए हम निकल जाते हैं, धरा के उन भागों की यात्रा करने जहां कुदरत ने अलग ढंग से नेमतें बिखरी हुई हैं और अपनी अज्ञानता और अनजानेपन के कारण हम उनके मूल्य को नहीं समझ पाए। हम घूमना चाहते हैं अपने भीतर के उस अलबेले युवा को अपने ऊपर हावी होने देने के लिए जो समय की रफ्तार को धीमा करके फिर से अलहड़पन करना चाहता है।"

कुछ ऐसे ही अनुभव के लिए मैं अपने परिवार के साथ अप्रैल 2024 में पालमपुर घूमने गई। पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला से कुछ मील की दूरी पर स्थित एक छोटा-सा पहाड़ी शहर है, जो धौलाधार रेंज के शानदार नजारों के लिए जाना जाता है। इस शहर के चारों ओर स्थित पर्वत श्रृंखलाएं यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य की झलक को अविस्मरणीय बना देती हैं। कांगड़ा घाटी में स्थित इस शहर के लोग अपने हिमाचली परिवेश और परम्पराओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं।

हमने अपना सफर 13 अप्रैल की सुबह करीब 6 बजे चण्डीगढ़ से अपने निजी वाहन में शुरू किया। तकरीबन 12 बजे तक हम अपने सुंदर से रिज़ॉर्ट "डाक बंगला - इनफिनटी" पहुँच गए। इस रिज़ॉर्ट को चुनने का मुख्य कारण था, इसका चाय के बगान के बीच में बने होना। यह रिज़ॉर्ट चाय के बगानों से घिरा हुआ है और जब आप अपने कमरे की खिड़की खोलते हैं तो मन तरोताजा हो जाता है, चाय के बागानों की महक आपके मन-मस्तिष्क में स्फूर्ति भर देती है।

कुछ देर आराम करने के बाद हम पालमपुर का भ्रमण करने के लिए चल पड़े। हमारे रिज़ॉर्ट से 3 किलोमीटर की दूरी पर 'सौरभ वन विहार' था जो कि 13 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला एक नेचर पार्क है और कारगिल युद्ध में शहीद बहादुर सैनिक लेफ्टिनेंट श्री सौरभ कालिया को समर्पित है। यह पार्क न्यूगेल, खड़ के किनारे स्थित है। यहाँ पर बहती सुंदर नदी, चीड़ के विशाल पेड़ और निर्मल ठण्डी हवा - शायद यही वह रेसिपी है जो जीवन को उमंग से भर देती है। इस पार्क में एक छोटा तालाब भी था, जहाँ मेरी बेटी यामी ने नौका बिहार का लुफ़्त उठाया। धूमते-घूमते मानो वक्त का पता ही नहीं चला और अंधेरा होने लगा। फिर हम अपने रिज़ॉर्ट पहुँचे, जहां हमने स्वादिष्ट पहाड़ी व्यंजनों वाले भोजन का आनंद लिया।

अगली सुबह हमारा स्वागत धीमी-धीमी बारिश ने किया। बारिश से तापमान में अचानक गिरावट आ गई। शुक्र है कि हम अपने साथ स्वेटर, जैकट आदि लाए थे। बारिश थमते ही हमने चाय के बगानों के पास बैठकर गर्मागरम नाश्ता किया। अब वक्त था यात्रा में अगले पड़ाव पर पहुँचने का, तो हम सब निकल पडे बैजनाथ की

ओर। बैजनाथ पालमपुर से 16-17 किमी की दूरी पर स्थित है। यह स्थान श्री बैजनाथ मंदिर के लिए जाना जाता है, यहाँ भगवान शिव की पूजा 'चिकित्सा के देवता' के रूप में की जाती है। पालमपुर से बैजनाथ का रास्ता बहुत ही मनमोहक है। एक तरफ चाय के बागान हैं और दूसरी तरफ छोटी-सी नदी बहती है। यह छोटा सा सफर अपने आप में एक अलौकिक अनुभव है। श्री बैजनाथ मंदिर बहुत सुंदर है और पुराना भी है। इसे 1204 ईस्वी में अहुका और मन्युका नामक दो स्थानीय व्यापारियों ने बनवाया था। बारिश की वजह से, मंदिर में बहुत कम भीड़ थी और जल्दी ही हमें मंदिर के गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग के दर्शन हुए।

बैजनाथ से लौटते समय हम चल पड़े 'ताशी जोंग मोनेस्टरी' की ओर जो कि बौद्ध धर्म को समर्पित है। बैजनाथ से कुछ किलोमीटर की चढ़ाई पर यह बेहद सुन्दर मठ है। रास्ता काफी संकरा था, लेकिन आस पास का वातावरण दिल को छू लेने वाला था। एक तरफ फूलों से लदे पौधे और दूसरी तरफ स्थानीय लोगों के घर थे। उस समय बारिश तेज हो चुकी थी और हवा बर्फ के सामन ठण्डी हो चुकी थी। मठ दर्शन के बाद हमने पास में स्थित कैफे में प्रसिद्ध मोमो, सैंडविच और गर्मागर्म कॉफी का आनंद उठाया। मन तो था कि ताशी जोंग इलाके में ही बस जाएँ, क्या अद्भुत शांति और पवित्रता का अनुभव था। परंतु वापिस तो जाना ही था, तो हम शाम को रिज़ॉर्ट की तरफ चलने लगे। रिज़ॉर्ट मे कुछ देर आराम करने के बाद हमने पालमपुर के बाजार में चहलकदमी करते हुए स्थानीय उत्पादों को देखा। हमने पहाड़ी चाय खरीदी और आस-पास की दुकानें देखी। जैसे-जैसे वक्त बीत रहा था, हमारा सफर भी खत्म हो रहा था, मन हो रहा था कि वक्त थम जाए, परन्तु ना वक्त रुकता है और न ही सफर। अगली सुबह मैं अपने कमरे की बालकनी में बैठ कर आखिरी बार चाय के बागानों को निहारने लगी, उस दिन मौसम बहुत साफ था और धूप भी निकली थी। नाश्ता करने के बाद सारा सामान पैक करके हम चण्डीगढ़ की ओर वापिस चल पड़े।

सचमुच यह सफर हमेशा मेरे दिल में बसा रहेगा और आप सभी को मेरा यही सुझाव है कि कभी न कभी आप पालमपुर जरूर जाएँ और पहाड़ों की गोद में प्रकृतिक सौन्दर्य का आनंद उठाएँ ।

प्राकृतिक आपदा

सुंदर सृष्टि थी हमारी,
खेत-खलिहान, हवा थी निराली,
धरती, आसमान, नदियां और पर्वत,
देख कर सबको खिल उठता था यह मन।

गर्मी, सर्दी, वर्षा ऋतु हो या हो बसंत,
हर मौसम का समय पर होता था आगमन,
पशु, पक्षी, इंसान हो या जानवर,
सभी को भाता था, प्रकृति का हर एक रंग।

किन्तु, जबसे जागा स्वार्थ इंसान के मन में,
बहक गया वह लोभ और लालच में,
खोद कर पहाड़ एवं काटकर पेड़-पौधे वृक्ष,
खत्म कर रहा जंगल एवं जनजातियों का अस्तित्व।

ऋतुओं में हो रहा अस्वाभाविक परिवर्तन,
भारी मात्रा में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन,
बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव,
प्रकृतिक आपदाओं को दे रहा निमंत्रण।

सृष्टि को फिर से सुंदर एवं संतुलित बनाना होगा,
मानव जाती को धरती के प्रति अपना कर्तव्य निभाना होगा,
पेड़-पौधे, वृक्ष एवं जंगलों को बचाकर,
इस सृष्टि को प्राकृतिक आपदाओं से बचाना होगा।

सुलेखा शर्मा
बैंक ऑफ इंडिया
आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़

लघुकथा

वक़्त

विशाल बेडीस
अधिकारी
कॉर्पोरेट सेवाएं विभाग
आंचलिक कार्यालय नासिक

किसी बुद्धिजीवी ने कहा था कि "मंज़िल उन्ही को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है, सिर्फ़ पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।"

सपने तो हर कोई देखता है कामयाब होने का सपना, आर्थिक रूप से सशक्त होने का सपना, शारीरिक रूप से ताकतवर होने का सपना, मानसिक रूप से और मजबूत होने का सपना आदि। अपने सपनों के मंजिल तक पहुंचने के सफ़र में कामयाब वही होता है जो हर अच्छे-बुरे वक़्त में हौसला रखता है। यह सफ़र काफ़ी लम्बा भी होता है कई बलिदान देने पड़ते है। कोई कहता है कि मेरा बुरा वक़्त चल रहा है, कोई कहता है मेरा अच्छा वक़्त चल रहा है, किसी का वक़्त बदल रहा होता है और किसी के हाथ से वक़्त निकलता जाता है। यह वक़्त ही है जो आपको जख्म देता है और वक़्त ही है जो इसी जख्म पर मरहम लगाने का भी काम करता है। आज की जीवनशैली में यही कीमती वक़्त लोगों के पास कम है। लोगों को कम वक़्त में सब चाहिए फिर वो - पैसा, गाड़ी, ज्ञान, प्यार, शांति कुछ भी हो। जैसे स्वादिष्ट खाना बनाने के लिए खाने को कुछ वक़्त तक धीमी आंच पर पकाना ज़रूरी होता है अगर खाना ठीक से पकाया नहीं जाए तो वो खाने के लायक नहीं होगा ठीक उसी तरह किसी काम का परिणाम अच्छा हो उसके लिए उस काम को उसका निश्चित वक़्त देना ज़रूरी है। हमें शिक्षा-ज्ञान की प्राप्ति तुरंत नहीं होती, उसके लिए लगातार अभ्यास करना होता है। कुछ कार्यों में अधिक प्रयास करने पर भी अच्छा परिणाम न मिले तो थोड़ा और वक़्त देना चाहिए। कहते हैं कि हौसले और धैर्य से बिगड़ा काम भी ठीक हो जाता है। वक़्त देना भी एक कला है।

यह कहानी भारत की आज़ादी से बहुत पहले, 24 सितंबर 1861 में पारसी परिवार में जन्मी एक लड़की की है । यह परिवार तब के बम्बई प्रान्त के नवसारी शहर में रहता था और लड़की के पिता सोराबजी उस वक़्त बम्बई में काफ़ी जाने माने व्यापारी थे। वे शिक्षा और दान-धर्म में विश्वास रखने वाले भले मनुष्य थे। उस वक़्त भारत पर हो रहे अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध राष्ट्रवादी आन्दोलन की नींव रखी जा रही थी। इसी माहौल में यह लड़की बड़ी हो रही थी और राजनैतिक मामलों की तरफ़ उसकी दिलचस्पी भी बढ रही थी। तभी 1885 में उनकी शादी जाने माने वकील रुस्तम जी से हुई। जहां एक तरफ़ रुस्तम जी अंग्रेजों की संस्कृति से प्रभावित थे, उनका यह विचार था कि अंग्रेजों ने भारत और उसके लोगों के लिए बहुत कुछ किया है। वही दूसरी तरफ़ उनकी पत्नी अर्थात् इस कहानी की मुख्य पात्र दिल से राष्ट्रवादी थी और उनका मानना था कि अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिए भारत का बेरहमी से शोषण किया है। वह इस शादी से खुश नहीं थी और इसीलिए अपना काफ़ी वक़्त सामाजिक कल्याण में लगाती थी। कुछ सालों बाद सन् 1896 में जानलेवा प्लेग फैला और वह तुरंत ही लोगों की मदद में सक्रीय हो गयी। बंबई में हर रोज़ सैकड़ों लोग मर रहें थे, परिस्थितिवश इन्हें भी इस बीमारी ने जकड़ लिया था। डॉक्टरों ने उन्हें बाहर यूरोप में रहने की सलाह दी ताकि अलग आबोहवा में उनकी सेहत ठीक हो सके।

डॉक्टरों की सलाह मानकर उन्होनें लंदन जाने का निर्णय लिया। लंदन में प्रवास के दौरान उनकी मुलाकात दादाभाई नौरोजी से हुई और फिर वो एक भारतीय राजनैतिक पार्टी के लिए काम करने लगी। उन्होंने कई राष्ट्रवादी आंदलनों में भाषण दिया और भारत पर हो रहें अत्याचारों के बारे में अनेक विदेशियों को अवगत कराया। कुछ वक़्त के बाद अंग्रेजों से उन्हें एक संदेश आया कि उनकी भारत में वापसी पर रोक लगा दी गई है। यह रोक तभी हटाई जाएगी जब वह लिखित रूप में देंगी कि भविष्य में वह अंग्रेजों के खिलाफ किसी भी आंदोलन में हिस्सा नहीं लेंगी। लेकिन उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया और इन्हें यूरोप में ही अन्य निर्वासितों की तरह रहना पड़ा। परंतु अंग्रेजों की इन हरक़तों की वजह से उनके मन में आंदोलन की भावना और दृढ़ हो गई। फिर उन्होंने अन्य देशभक्तों को खोजा और अपनी मातृभूमि के लिए दिन-रात एक कर दिया। उन्होनें कई क्रांतिकारी पत्रिकाएं ना सिर्फ लिखी, बल्कि उनका प्रकाशन और वितरण भी किया। भारत और ब्रिटेन में प्रतिबद्धता होने के बावजूद वह भारतीय क्रांतिकारियों तक अपनी साप्ताहिक पत्रिका पहुँचाने में सफल रही। भारत में ना रहने के बावजूद भी वह भारत में क्रांतिकारी विचारों का प्रचार कर रही थी और फिर 22 अगस्त 1907 को वह ऐतिहासिक दिन आया जब वह पहली व्यक्ति बनी जिसने विदेशी धरती पर भारतीय झंडा फहराया। यह कोई और नहीं, मैडम भीकाजी कामा थी जिन्होंने मानव अधिकार समानता और स्वराज जैसे विचारो को भारत के साथ-साथ दुनिया के कई देशों में भी फैलाया। वक़्त उनके खिलाफ था पर इसी वक़्त को उन्होनें एक अवसर में तब्दील कर दिया।

भारत से दूर रहकर भी उन्होंने भारत में स्वतंत्रता का बीज बोया। तेतीस सालों के बाद जब वह काफ़ी बीमार थी तब अंग्रेजों ने उनकी भारत वापसी की याचिका मंज़ूर की और उनका आखरी वक़्त अपनी मातृभूमि पर गुज़रा। सन् 1907 में मैडम भीकाजी कामा ने जर्मनी में जो भारतीय झंडा लहराया वह वापस भारत लाया गया, जो आज भी पुणे के केसरी वाड़ा संग्रहालय में मौजूद है। हमें यह बात जरूर याद रखनी चाहिए कि वक़्त को पकड़ने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए, वो जैसे चल रहा है उसे चलने देना चाहिए हौसला रखना चाहिए और उसे अपनी ताकत में तब्दील करना चाहिए।

विश्व हिंदी दिवस: दोहा एकादश

मानव का उन्मेष यह, अनुपम और अमूल्य।
अबतक ना कुछ भी हुआ, भाषा के समतुल्य ।।

भाषा का पग -पग यहाँ, अमित अमिय उपयोग।
यह पावन साधन करत, मनुज मनुज का योग ।।

अक्षर ध्वनि सम संगति और व्याकरण सिद्ध।
लोकप्रिय भाषा वही, भाषा वही प्रसिद्ध ।।

भाषाएं जग मे अमित, सब समर्थ सब नेक।
जगत व्यापिनी जो हुईं, हिंदी उनमें एक ।।

संस्कृत की संस्कृति धरे, गंग-जमुन रस धार।
चिंतन की चैतन्यता, अमल आर्ष व्यवहार ।।

उद्घाटन हर भाव का, सत्यापन युगधर्म।
चिर परिचित युग सत्य से, परिचित जीवन मर्म ।।

वैदिकता की उच्चता, उपनिषदीय ललाट।
धम्मपदी शुचि साधना, गुरुतर विशद विराट ।।

सकल कला आनन लिए, हृदय ज्ञान विज्ञान।
मनहर मनभावन ललित, पग-पग नवल वितान ।।

हिंदी समरस बढ चली, विहंसत सागर पार।
स्वागत मे आगे बढ़ा, ललक लिए संसार ।।

विश्व विमोहन में रमी, अधर अमन के बोल।
इतराया इतिहास भी, हिय हर्षित भूगोल ।।

अंग लगावति विश्व को, सहज सनेह समेत।
बसुधा होय कुटुंब जस, हिन्दी का अभिप्रेत।।

राकेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
हरदोई अंचल

विश्व हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय अंतर बैंक हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में हिन्दीतर भाषी वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टि

आर्थिक विकास एवं महंगाई; प्रबंधन एवं चुनौतियाँ

सिराज़ खान
अधिकारी
ग्राहक श्रेष्ठता एवं शाखा बैंकिंग
प्रधान कार्यालय

परिचय :

आर्थिक विकास एवं महंगाई प्रबंधन किसी भी देश की वृद्धि और स्थिरता के महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं। जैसे-जैसे देश आर्थिक प्रगति के लिए प्रयास करते हैं, उन्हें समग्र विकास प्रक्रिया को बाधित होने से बचाने के लिए महंगाई के प्रबंधन की चल रही चुनौती का सामना करना पड़ता है। हम विस्तार में आर्थिक विकास एवं महंगाई; प्रबंधन और चुनौतियों से संबंधित ऐतिहासिक संदर्भ, प्रमुख आंकड़े, प्रभाव और चुनौतियों पर चर्चा करेंगे। हम सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर भी चर्चा करेंगे और आर्थिक विकास एवं महंगाई, प्रबंधन एवं चुनौतियों से संबंधित संभावित भविष्य के विकास पर चर्चा करेंगे।

पहले हम आर्थिक विकास, आर्थिक विकास का इतिहास, आर्थिक विकास के प्रभाव, फायदे और नुकसान, भविष्य के व्यवसाय विकास के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

आर्थिक विकास

आर्थिक विकास से तात्पर्य जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता और सामान्य स्वास्थ्य में सुधार के उद्देश्य से अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक वृद्धि, विकास और वृद्धि से है। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए सभी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलू शामिल हैं कि विकास एकीकृत और टिकाऊ है। आर्थिक विकास कोई नई अवधारणा नहीं है; पूरे इतिहास में, सभ्यताओं ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने और अपने लोगों के लिए अवसर पैदा करने का प्रयास किया है। हालाँकि, समय के साथ सफल आर्थिक विकास की समझ और तरीके बदल गए हैं।

आर्थिक विकास का इतिहास

आर्थिक विकास की अवधारणा की उत्पत्ति मेसोपोटामिया (Mesopotamia) और मिस्र (Egypt) जैसी प्राचीन सभ्यताओं में देखी जा सकती है। प्राचीन काल में कृषि, व्यापार और शिल्प में प्रगति ने आर्थिक विकास को समर्थन दिया। 16वीं और 17वीं शताब्दी में व्यापारिकता के उदय और यूरोपीय शक्तियों द्वारा नए क्षेत्रों के उपनिवेशीकरण के कारण विश्व आर्थिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी की शुरुआत में औद्योगिक क्रांति के दौरान, आर्थिक विकास तकनीकी प्रगति और पूंजीवाद के उदय के साथ जुड़ा हुआ था। विनिर्माण, परिवहन और कृषि में नवाचारों से उत्पादकता, शहरीकरण और वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन में वृद्धि हुई। 20वीं सदी में, आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण कारक बन गया क्योंकि नए स्वतंत्र राष्ट्रों ने गरीबी और अविकसितता पर काबू पाने की कोशिश की। इस अवधि के दौरान, कई विचार और विकास सामने आए जिन्होंने राज्य की भूमिका पर जोर दिया, खासकर विकास रणनीतियों की योजना और कार्यान्वयन में।

आर्थिक विकास का प्रभाव

आर्थिक विकास का समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस प्रभाव के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का मूल्यांकन करना आवश्यक है। लाभों में रोजगार में वृद्धि, बुनियादी ढांचे में सुधार तथा शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में वृद्धि शामिल है। आर्थिक विकास से गरीबी कम होती है क्योंकि आय बढ़ती है और नागरिकों के पास अपने स्वास्थ्य में निवेश करने के लिए अधिक संसाधन होते हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी और

नवाचार में प्रगति अक्सर आर्थिक विकास, रहने की स्थिति में सुधार और लोगों और व्यवसायों के लिए नए अवसर पैदा करने से जुड़ी होती है। हालांकि, आर्थिक विकास के अपने नुकसान भी हैं। उदाहरण के लिए, 20वीं सदी में तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरण का क्षरण हुआ और असमानता में वृद्धि हुई है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, प्रदूषण और अमीर एवं गरीब के बीच की खाई आर्थिक विकास की कुछ चुनौतियाँ हैं। इसके अलावा, आर्थिक विकास कभी-कभी संस्कृति और परंपराओं के उपयोग के परिणामस्वरूप होता है, जिससे व्यक्तित्व और सामाजिक एकजुटता का नुकसान होता है।

आर्थिक विकास के लाभ

आर्थिक विकास ने दुनिया भर के लोगों को कुछ बड़े लाभ पहुंचाए हैं। लाभों में से एक जीवन की गुणवत्ता में सुधार है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है और आय बढ़ती है, व्यक्तियों और परिवारों के पास अपने स्वास्थ्य में निवेश करने के लिए अधिक संसाधन होते हैं। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और अन्य बुनियादी सेवाओं तक पहुंच में सुधार होगा। रोजगार निर्माण आर्थिक विकास का एक और सकारात्मक पहलू है। जैसे-जैसे व्यवसाय बढ़ता है, नए उद्यम सामने आते हैं और निर्माण परियोजनाएँ शुरू होती हैं, काम के घंटे बढते हैं। इससे लोग स्थिर आय अर्जित कर सकते हैं और अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। आर्थिक विकास प्रगति और नवाचार को भी बढ़ावा देता है। एक समृद्ध देश के रूप में, उन्होंने अनुसंधान और विकास में निवेश करके विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग और अन्य क्षेत्रों में प्रगति की है। आगे की शिक्षा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है और कई क्षेत्रों में उत्पादकता और दक्षता बढ़ाती है। इसके अलावा, आर्थिक विकास से अक्सर गरीबी में कमी आती है। जैसे-जैसे आय और रोज़गार में वृद्धि हुई, लोग गरीबी से बाहर निकले और उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के अवसर मिले। इसका सामाजिक गतिशीलता पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है, जिससे लोगों को गरीबी के चक्र से बाहर निकलने और अपने एवं अपने परिवार के लिए बेहतर भविष्य खोजने में मदद मिलती है।

आर्थिक विकास के नुकसान

हालाँकि आर्थिक विकास के कई फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कुछ नुकसान और समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं। आर्थिक विकास का पर्यावरण पर प्रभाव एक बड़ी चिंता का विषय है। तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण अक्सर प्रदूषण बढ़ता है, वनों की कटाई होती है और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास होता है। पर्यावरणीय क्षरण पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता और अंतत: सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करता है। इसलिए स्थिरता के बारे में सोचना और पर्यावरण को होने वाले नुकसान को सीमित करने वाली प्रथाओं का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। एक और नकारात्मक प्रभाव असमानता में वृद्धी है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था बढ़ती है. धन का वितरण अक्सर असमान हो जाता है, जिससे अमीर और गरीब के बीच अंतर पैदा होता है। इससे तनाव, धोखाधडी बढ़ती हैं एवं रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। एक कुशल और प्रभावी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इन असमानताओं को दूर करना महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, आर्थिक विकास कभी-कभी सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याएं भी पैदा करता है। एक आधुनिक समाज के रूप में, पारंपरिक जीवन शैली, संस्कृति और सामाजिक रिश्ते प्रभावित या कमजोर हो सकते हैं। आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक ताने-बाने की सुरक्षा के बीच संतुलन स्थापित करना महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास से कुछ आर्थिक गतिविधियों पर निर्भरता भी बढ़ेगी। जब व्यवसाय एक ही क्षेत्र पर निर्भर होते हैं, जैसे कि तेल या व्यापार, तो वे वैश्विक अर्थव्यवस्था में बदलाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। इन जोखिमों को कम करने के लिए विविधता लाना और एक मजबूत व्यवसाय बनाना महत्वपूर्ण है।

भविष्य का आर्थिक विकास

जैसा कि हम भविष्य की ओर देखते हैं, कुछ महत्वपूर्ण विकास कारक भविष्य के व्यावसायिक विकास को निर्धारित करेंगे। पहला बड़ा क्षेत्र स्थिरता है। जैसे-जैसे दुनिया पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है, सतत आर्थिक विकास पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करना, चक्रीय

अर्थव्यवस्था का समर्थन करना और जलवायु परिवर्तन को कम करने और पर्यावरण की रक्षा के लिए नीतियों को लागू करना शामिल है। शिक्षा और नवाचार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास, विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में, अपने साथ अवसर और चुनौतियों दोनों लेकर आता है। प्रौद्योगिकी दक्षता बढ़ा सकती है, सार्वजनिक सेवाओं में सुधार कर सकती है और लाभ का प्रसार सुनिश्चित करते हुए नई नौकरियाँ पैदा कर सकती है।

संक्षेप में, अर्थव्यवस्था की वृद्धि ने पूरे इतिहास में सामाजिक परिवर्तन को जन्म दिया है। प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आज तक, आर्थिक विकास, तकनीकी विकास और मानव स्वास्थ्य में प्रगति ने समाज को बदल दिया है और लाखों लोगों के जीवन में सुधार किया है। हालाँकि, आर्थिक विकास कई सकारात्मक परिणाम प्राप्त करता है, इसके नकारात्मक प्रभावों, जैसे पर्यावरणीय क्षति और बढ़ती असमानता को पहचानना और उनसे निपटना महत्वपूर्ण है। प्रतिभाशाली लोगों से सीखकर और विविध दृष्टिकोणों का उपयोग करके, भविष्य की अर्थव्यवस्था के विकास से स्थिरता, एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हो सकता है, जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के स्वास्थ्य में योगदान दे सकता है।

अब हम महंगाई, महंगाई का इतिहास, महंगाई के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

महंगाई

महंगाई एक जटिल आर्थिक घटना है जिसका व्यक्तियों, व्यापार जगत और समग्र रूप से अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसका तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि से है जो समय के साथ बढ़ती रहती हैं और अंततः पैसे की क्रय शक्ति को नष्ट कर देती हैं।

महंगाई का इतिहास

महंगाई के महत्व को समझने के लिए महंगाई के इतिहास को समझना महत्वपूर्ण है। पूरे इतिहास में, विशिष्ट कारणों और प्रभावों के साथ, महंगाई के कई दौर आए हैं। सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक अति महंगाई है जो प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1920 के दशक की शुरुआत में जर्मनी में हुई थी। 1970 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में एक और बड़ी महंगाई हुई, जिसे "महान महंगाई" के रूप में जाना जाता है। इस अवधि को कारकों के संयोजन की विशेषता थी, जिसमें तेल की बढ़ती कीमतें, विस्तारवादी राजकोषीय नीति और विस्तारवादी मौद्रिक नीति शामिल थी। परिणामस्वरूप, महंगाई दोहरे अंक में पहुंच गई, जिससे आर्थिक स्थिरता को खतरा पैदा हो गया और नीति निर्माताओं को महंगाई पर अंकुश लगाने के लिए मौद्रिक सख्त नीतियां अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

महंगाई के सकारात्मक पहलू

हालाँकि महंगाई को बहुत बुरा माना जाता है, महंगाई की थोड़ी सी मात्रा सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। महंगाई व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए जमाखोरी के बजाय खर्च करने और निवेश करने के लिए प्रोत्साहन पैदा करती है। अधिक आर्थिक गतिविधि से रोजगार का स्तर बढता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा, मध्यम महंगाई कर्ज के बोझ को कम कर सकती है क्योंकि समय के साथ पैसे का मूल्य घटता जाता है।

महंगाई के नकारात्मक प्रभाव

महंगाई के उच्च स्तर के कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। इससे पैसे की क्रय शक्ति कम हो जाती है और लोगों का जीवन स्तर गिर जाता है। वर्ष 2010 में बनी बॉलीवुड फिल्म पिपली लाईव का गीत "सखी सैया तूँ खूब ही कमात है, महंगाई डायन खाए जात है" महंगाई के नकारात्मक प्रभाव को और पैसो की क्रय शक्ति को सीधी-सरल भाषा में समझाता है। यह उन व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है जिनकी आय निश्चित है या जिन्हें महंगाई से बचाने के लिए वित्तीय साधनों तक पहुंचने में कठिनाई होती है। इसके अलावा, बढ़ती महंगाई अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता पैदा करती है, जिससे व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना मुश्किल हो जाता है। यह अनिश्चितता निवेश और आर्थिक विकास को बाधित कर सकती है क्योंकि कंपनियां दीर्घकालिक परियोजनाएं शुरू करने में झिझकती हैं।

आर्थिक विकास और महंगाई का ऐतिहासिक संदर्भ: प्रबंधन और चुनौतियाँ :

आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन के बीच अंतरसंबंध को समझने के लिए, ऐतिहासिक संदर्भ की जांच करना आवश्यक है। पूरे इतिहास में, अर्थव्यवस्थाएं विकास के विभिन्न चरणों से गुज़री हैं, जिसमें महंगाई लगातार चिंता का विषय रही है। यहां तक कि रोमन साम्राज्य और प्राचीन चीन जैसी प्राचीन सभ्यताओं में भी, महंगाई ने आर्थिक नीतियों को आकार देने में भूमिका निभाई और सामाजिक अस्थिरता में योगदान दिया। हालाँकि, 18वीं और 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान आर्थिक विकास केंद्र में आया। औद्योगीकरण से विनिर्माण क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई और उत्पादकता में वृद्धि हुई, जिससे पर्याप्त आर्थिक विकास हुआ। यह काल आर्थिक चिंतन के उद्भव और सिद्धांतों के प्रतिपादन का भी गवाह है इसका उद्देश्य महंगाई को समझना और प्रबंधित करना है।

इतिहास में कई प्रमुख हस्तियों ने महंगाई को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसा ही एक व्यक्ति नोबेल पुरस्कार विजेता मिल्टन फ्रीडमैन था, जो मानता था कि महंगाई मुख्य रूप से एक मौद्रिक घटना थी। उनका मानना है कि मुद्रा आपूर्ति में उच्च वृद्धि से महंगाई को बढ़ावा मिलेगा और महंगाई को नियंत्रित करने में केंद्रीय बैंक नीति के महत्व पर जोर दिया जाता है। जॉन मेनार्ड कीन्स महंगाई के क्षेत्र में एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, जिनके विचारों ने महामंदी के दौरान व्यापक आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया। कीन्स ने मंदी के समय में कुल मांग को प्रोत्साहित करने के लिए घाटे के खर्च सहित मजबूत राजकोषीय नीतियों की वकालत की। हालाँकि, यह अवधारणा उच्च सरकारी खर्च के कारण महंगाई के जोखिम को दर्शाती है।

विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर महंगाई का प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। मध्यम महंगाई का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। उदाहरण के लिए, यह व्यक्तियों को संचय करने के बजाय खर्च करने और निवेश करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है और समय के मूल्य को कम कर सकता है। आर्थिक गतिविधि बढ़ने से अधिक रोजगार और समग्र आर्थिक विकास होता है। हालाँकि, बढ़ती महंगाई लोगों और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। यदि महंगाई मध्यम स्तर से ऊपर बढ़ जाती है, तो पैसे की क्रय शक्ति कमजोर हो जाती है और घरेलू जीवन स्थितियों में गिरावट आती है। इसके अलावा, महंगाई अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता पैदा करती है, जिससे व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना और संसाधनों को उचित रूप से आवंटित करना मुश्किल हो जाता है। यह झटका निवेश और आर्थिक विकास में बाधा बन सकता है।

आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन का प्रभाव:

सतत आर्थिक विकास के लिए महंगाई का प्रभावी प्रबंधन महत्वपूर्ण है। महंगाई का प्रभाव उसकी दर और स्थिरता के आधार पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है। मध्यम महंगाई खर्च को प्रोत्साहित करके और ऋण के वास्तविक बोझ को कम करके निवेश और आर्थिक विकास के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर सकती है। हालाँकि, उच्च और अस्थिर महंगाई क्रय शक्ति को कम करती है, अनिश्चितता बढ़ाती है। और आर्थिक विकास में बाधा डालती है। महंगाई आय वितरण को भी प्रभावित कर सकती है, क्योंकि निश्चित आय वाले व्यक्ति, जैसे कि पेंशनभोगी, क्षीण क्रय शक्ति से पीड़ित हैं। इसके अलावा, महंगाई सट्टा गतिविधियों को जन्म दे सकती है, जिसमें व्यक्ति और व्यवसाय अचल संपत्ति या सोने जैसी गैर-उत्पादक परिसंपत्तियों में निवेश करके अपने धन की रक्षा करना चाहते हैं। आर्थिक विकास के लिए प्रयासरत नीति निर्माताओं के लिए महंगाई चुनौतियां खड़ी कर सकती है। उच्च महंगाई दरें व्यापक आर्थिक स्थिरता को कमजोर कर सकती है, विदेशी निवेश में बाधा डाल सकती हैं और उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती हैं। आर्थिक विकास के लिए स्वस्थ और अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए महंगाई का प्रबंधन महत्वपूर्ण हो जाता है।

आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन में चुनौतियां :

जबकि आर्थिक विकास का केंद्रीय लक्ष्य निरंतर विकास हासिल करना है, महंगाई का प्रबंधन विभिन्न चुनौतियां प्रस्तुत करता है। ऐसी ही एक चुनौती महंगाई और बेरोजगारी के बीच संतुलन है। यह संबंध, जिसे अक्सर फिलिप्स वक्र के रूप में जाना जाता है, सुझाव देता है कि जब महंगाई कम होती है, तो बेरोजगारी अधिक होती है और इसके विपरीत। नीति निर्माताओं को इन दो चरों के

बीच सही संतुलन बनाने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। एक अन्य चुनौती महंगाई की गतिशीलता है, जो विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं और समयावधियों में भिन्न हो सकती है। राजकोषीय घाटा, आपूर्ति झटके और मौद्रिक नीति प्रभावशीलता जैसे कारक महंगाई की गतिशीलता में योगदान करते हैं। इन गतिशीलता को समझना और प्रभावी रणनीति तैयार करना महंगाई के प्रबंधन और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण हो जाता है। इसके अलावा, वैश्वीकरण आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन में अतिरिक्त चुनौतियाँ पैदा करता है। बढ़े हुए व्यापार और पूंजी प्रवाह ने अर्थव्यवस्थाओं को अधिक परस्पर जुड़ा हुआ बना दिया है, जिससे अलग-अलग देशों के लिए महंगाई को अलग-अलग प्रबंधित करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और विनिमय दर में उतार-चढ़ाव का घरेलू महंगाई दरों पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है, जिससे नीति निर्माताओं को अपनी रणनीतियों में अधिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य अपनाने की आवश्यकता होती है।

आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन में प्रभावशाली व्यक्ति:

आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन के क्षेत्र में, कई प्रभावशाली व्यक्तियों ने अपने योगदान और अंतर्दृष्टि से अपनी छाप छोड़ी है। ऐसे ही एक व्यक्ति हैं पॉल बोल्कर, जिन्होंने 1979 से 1987 तक फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वोल्कर ने "बोल्कर शॉक" नामक अवधि के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका में कड़ी मौद्रिक नीतियों को लागू करके, महंगाई को नियंत्रण में लाकर महंगाई पर सफलतापूर्वक अंकुश लगाया और आर्थिक स्थिरता का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय अर्थशास्त्री और नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने भी आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सामाजिक विकास और कल्याण अर्थशास्त्र पर सेन के काम ने विकास प्रक्रिया के हिस्से के रूप में असमानताओं को दूर करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला।

आर्थिक विकास और महंगाई, प्रबंधन और चुनौतियों का निष्कर्ष:

आगे देखते हुए, भविष्य के कई संभावित विकास, आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन को प्रभावित कर सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन जैसी तकनीकी प्रगति में अर्थव्यवस्थाओं और श्रम बाजारों को नया आकार देने की क्षमता है। ये विकास महंगाई के प्रबंधन में नई चुनौतियाँ पेश कर सकते हैं, क्योंकि वे रोजगार और उत्पादकता के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा, पर्यावरणीय विचारों के आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की संभावना है। जैसे-जैसे राष्ट्र सतत विकास के लिए प्रयास करते हैं, नीतियों को पर्यावरणीय चिंताओं के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करने की आवश्यकता होगी। इस बदलाव के लिए महंगाई को प्रबंधित करने और हरित आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है। आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन जटिल रूप से जुड़े हुए हैं, और उनका प्रभावी प्रबंधन किसी देश की प्रगति और स्थिरता के लिए आवश्यक है। पूरे इतिहास में, कीन्स और फ्रीडमैन जैसी प्रमुख हस्तियों ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावशाली विचारों का योगदान दिया है। आर्थिक विकास, आय वितरण और व्यापक आर्थिक स्थिरता पर महंगाई का प्रभाव महंगाई को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

हालाँकि, महंगाई को प्रबंधित करना चुनौतियों से रहित नहीं है। नीति निर्माताओं को अपनी अर्थव्यवस्थाओं की अद्वितीय गतिशीलता को समझते हुए महंगाई और बेरोजगारी के बीच सही संतुलन बनाना चाहिए। वैश्वीकरण और भविष्य के विकास, जैसे तकनीकी प्रगति और पर्यावरणीय विचार, आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन के परिदृश्य को और आकार देंगे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, व्यापक रणनीतियों को अपनाना महत्वपूर्ण है जो विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करती हैं और महंगाई को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हुए सतत आर्थिक विकास प्राप्त करने का लक्ष्य रखती हैं। ऐतिहासिक संदर्भ, प्रभावशाली व्यक्तियों और चल रही चुनौतियों से सीखकर, राष्ट्र आर्थिक विकास और महंगाई प्रबंधन से जुड़ी जटिलताओं से निपट सकते हैं, अंततः अपने नागरिकों को लाभान्वित कर सकते हैं और दीर्घकालिक समृद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं।

वक्त

ए वक्त थम जा, ठहर जा जरा,
कुछ पल आराम तो, कर लेने दे।
कल तू फिर, भगाएगा हमें,
कल की दौड़ के लिए, तैयार तो हो लेने दे।

संघर्ष तो, रोज करवाता है,
कभी सर पे, हाथ फेर के फुस्ला भी दे।
झूठा ही सही, थोड़ा प्यार भी दिखा दे,
शायद तुझसे, थोड़ी नाराज़गी कम हो जाये।

हर पल, नए सवाल देता है,
पहले के सवालों का, जवाब लिये बिना।
ठीक से सवालों को, समझने तो दे,
जवाब देने के लिए, थोड़ा वक्त तो दे।

तू ना तो किसी के लिए, रुका है,
और ना ही कभी रुकेगा।
फिर भी एक आशा और विश्वास रखे हुए,
निहारते हैं तुझे, कभी तो तू बदलेगा।

भरतमोहन राठी
लिपिक
ऋण निगरानी विभाग
प्रधान कार्यालय

माटी

माटी मैं इस धरती की,
जैसा चाहो वैसा रूप धर आऊं।
कभी बनूं घड़ा पानी का,
तो कभी दीपक बन जाऊँ।।

कभी रूदू पैरों से किसी के,
तो कभी मूरत बन जाऊँ।
जो चाहें जैसा बनवाना,
मैं वैसे ढल जाऊं।

कभी बनूं खाना बचपन का,
तो कभी तिलक बन जाऊँ।
कभी तपूं मैं इस अग्नि में,
तो कभी बारिश में धूल जाऊँ

जब आऊ मैं गुस्से में,
तो आँधी का रूप दिखाऊं।
हैं जीवन नश्वर धरती पर,
कण कण में भी बिखर जाऊँ।

विकास कुमार नामदेव
मुख्य प्रबंधक- सी एवं आईसी
नासिक आंचलिक कार्यालय

अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें

मोनिका चौधरी
अधिकारी
सीपीसी जोधपुर आंचलिक कार्यालय
जोधपुर अंचल

"अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें" स्टीफन आर. कोवे की एक महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रशंसित स्व-सहायता पुस्तक है। इस पुस्तक में कोवे ने सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए सात प्रमुख आदतों का एक समग्र और सिद्धांत-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक न केवल व्यक्तिगत बल्कि पेशेवर जीवन में भी प्रभावी होने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करती है।

पुस्तक की शुरुआत 'आदतों' की अवधारणा से होती है, जो हमारे जीवन में छोटे-छोटे कार्यों और दृष्टिकोणों को संगठित करती हैं। कोवे ने इस पुस्तक में प्रभावशीलता को सिर्फ कार्यक्षमता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे चरित्र और नैतिकता के साथ जोड़ा है। उन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया है, जिससे व्यक्ति न केवल सफल हो सके, बल्कि अपनी सफलता का आनंद भी ले सके।

सात आदतें क्रमशः व्यक्तिगत और पारस्परिक प्रभावशीलता के विभिन्न पहलुओं को कवर करती हैं, जैसे कि आत्म-जिम्मेदारी, विज़न और लक्ष्यों की स्पष्टता, समय प्रबंधन, आपसी लाभकारी संबंध, संचार कौशल, टीमवर्क, और आत्म-सुधार। ये आदतें हमें अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करने और अधिक संतुलित, सुखी, और सफल जीवन जीने में मदद करती हैं। कोवे की यह पुस्तक एक प्रेरणादायक और व्यवहारिक मार्गदर्शिका है, जो जीवन के हर पहलू में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

पहली आदतः सक्रिय (प्रोएक्टिव) रहें

प्रोएक्टिविटी का मतलब है कि हम अपने जीवन की जिम्मेदारी स्वयं लें और परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय उन्हें नियंत्रित करें। स्टीफन कोवे के अनुसार, प्रोएक्टिव लोग अपनी ऊर्जा और समय उन चीजों पर केंद्रित करते हैं जिन्हें वे बदल सकते हैं, बजाय इसके कि वे उन चीजों पर ध्यान दें जो उनके नियंत्रण से बाहर हैं। यह आदत हमें सिखाती है कि हम अपनी प्रतिक्रियाओं को चुन सकते हैं और अपने मूल्यों के अनुसार कार्य कर सकते हैं।

प्रोएक्टिव लोग अपनी भाषा में भी अंतर दिखाते हैं। वे कहते हैं "मैं कर सकता हूँ," "मैं चुनता हूँ," और "मैं जिम्मेदार हूँ," बजाय "मुझे करना है," "अगर ऐसा होता तो," और "मैं कुछ नहीं कर सकता।" इस प्रकार की सोच उन्हें परिस्थितियों के शिकार होने की बजाय उनके निर्माता बनाती है।

यह आदत हमें हमारे सर्कल ऑफ़ इन्फ्लुएंस (जिस पर हमारा नियंत्रण है) और सर्कल ऑफ़ कंसर्न (जिस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है) के बीच अंतर समझने में मदद करती है। जब हम अपने सर्कल ऑफ़ इन्फ्लुएंस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो यह धीरे-धीरे बढ़ता है, जिससे हम और भी अधिक प्रभावी बनते हैं।

प्रोएक्टिव बनने का मतलब है कि हम अपने जीवन के लिए सक्रिय रूप से योजना बनाएं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों। यह आदत हमें आत्म-निर्भर, आत्म-जागरूक, और वास्तव में स्वतंत्र बनाती है।

दूसरी आदतः शुरूआत करते समय अंत को ध्यान में रखें

दूसरी आदत "अंत को ध्यान में रखकर शुरूआत करें" का मतलब है कि हमें अपने जीवन के लक्ष्यों और विज़न को स्पष्ट रूप से समझकर अपने कार्यों को उसी के अनुरूप दिशा देनी चाहिए।

स्टीफन कोवे बताते हैं कि हर महत्वपूर्ण कार्य की शुरुआत एक स्पष्ट दृष्टिकोण से होती है। यह आदत हमें प्रेरित करती है कि हम पहले अपने जीवन का एक मिशन स्टेटमेंट बनाएं, जो हमारे मूल्यों और उद्देश्यों को दर्शाए।

इस आदत का मूल सिद्धांत यह है कि यदि आप अपने जीवन के अंत को ध्यान में रखकर सोचते हैं, तो आप अपनी प्राथमिकताओं को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं और अपने निर्णय उसी के अनुसार ले सकते हैं। यह आदत न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि पेशेवर जीवन में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें लक्ष्य निर्धारण और योजना बनाने में मदद करती है।

उदाहरण के लिए, जब आप किसी परियोजना पर काम कर रहे होते हैं, तो पहले यह सोचें कि आप अंत में क्या परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं। इस दृष्टिकोण से काम करने से आपकी दिशा स्पष्ट होती है और आप अपने समय और संसाधनों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

"अंत को ध्यान में रखकर शुरू करें" आदत हमें हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में उद्देश्यपूर्ण और परिणामोन्मुख दृष्टिकोण अपनाने में मदद करती है। यह हमें याद दिलाती है कि हमारे हर दिन के छोटे-छोटे निर्णय हमारे जीवन की बड़ी तस्वीर में योगदान करते हैं। इसलिए, यह आदत हमें अपने जीवन को अधिक उद्देश्यपूर्ण, संतुलित और सफल बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

तीसरी आदत: पहले महत्वपूर्ण चीजें करें

तीसरी आदत "पहले महत्वपूर्ण चीजें करें" का मतलब है कि हमें अपने समय और ऊर्जा को उन कार्यों पर केंद्रित करना चाहिए जो हमारे लक्ष्यों और मूल्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। स्टीफन कोवे हमें सिखाते हैं कि सभी कार्य समान नहीं होते, और हमें उन कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो हमारे दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए आवश्यक हैं, भले ही वे तत्काल न हों।

इस आदत का एक महत्वपूर्ण उपकरण है कोवे का टाइम मैनेजमेंट मैट्रिक्स, जो कार्यों को चार श्रेणियों में विभाजित करता है:

1. **महत्वपूर्ण और तात्कालिक (कर्म):** संकट और अत्यावश्यक समस्याएँ
2. **महत्वपूर्ण लेकिन तात्कालिक नहीं (गुणवत्ता):** दीर्घकालिक योजना, रिश्ते, और व्यक्तिगत विकास
3. तात्कालिक लेकिन महत्वपूर्ण नहीं (विचलन): रुकावटें, तत्काल समस्याएँ जो महत्वपूर्ण नहीं हैं
4. न तात्कालिक न महत्वपूर्ण (अपशिष्ट): व्यर्थ गतिविधियाँ

कोवे के अनुसार, हमें दूसरी श्रेणी (महत्वपूर्ण लेकिन तात्कालिक नहीं) पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए, क्योंकि यही वह क्षेत्र है जो हमें दीर्घकालिक सफलता और संतोष प्राप्त करने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए, दीर्घकालिक लक्ष्यों की योजना बनाना, रिश्तों को मजबूत करना, और व्यक्तिगत विकास पर काम करना उन कार्यों में शामिल हैं जो महत्वपूर्ण लेकिन तात्कालिक नहीं हैं। यह आदत हमें अनावश्यक व्यस्तताओं और रुकावटों से बचने में मदद करती है, और हमें अधिक संगठित, उत्पादक और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

"पहले महत्वपूर्ण चीजें करें" आदत हमें हमारी प्राथमिकताओं को स्पष्ट करने और हमारे जीवन के लिए एक संरचित और व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाने में मदद करती है। यह आदत हमें समय प्रबंधन में महारत हासिल करने और अपने लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

चौथी आदत: जीत पर ध्यान केन्द्रित रखें

चौथी आदत "जीत पर ध्यान केन्द्रित रखें" का मतलब है कि हमें हर परिस्थिति में ऐसे समाधान तलाशने चाहिए जिनसे सभी पक्षों को लाभ हो। स्टीफन कोवे के अनुसार, यह मानसिकता सहयोग और परस्पर सम्मान पर आधारित है, जहाँ हर किसी की जीत पर ध्यान दिया जाता है। यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत और व्यावसायिक रिश्तों में विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देता है।

जीत-जीत की सोच हमें प्रतिस्पर्धी मानसिकता से हटकर सहयोगात्मक मानसिकता अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इसमें यह समझना शामिल है कि किसी एक की जीत का मतलब दूसरे की हार नहीं होनी चाहिए। इसके बजाय, हम ऐसे समाधान खोजने पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो सभी संबंधित पक्षों के लिए लाभदायक हों।

उदाहरण के लिए, किसी व्यावसायिक वार्ता में, जीत-जीत सोच का मतलब होगा कि दोनों पक्ष अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों को समझें और एक ऐसा समझौता करें जिससे दोनों को फायदा हो। यह दृष्टिकोण रिश्तों को मजबूत करता है और दीर्घकालिक सहयोग को बढ़ावा देता है।

जीत-जीत सोचने से हम लोगों के साथ सकारात्मक और उत्पादक संबंध बना सकते हैं, जहाँ सभी को सम्मान और लाभ मिलता है। यह आदत हमें सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने, आपसी विश्वास बढ़ाने, और मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। जीत-जीत मानसिकता हमारे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में संतुलन और सफलता लाने में मदद करती है।

पाँचवीं आदत: पहले समझने की कोशिश करें, फिर समझाएं

पाँचवीं आदत "पहले समझने की कोशिश करें, फिर समझाएं" का मतलब है कि हमें प्रभावी संचार के लिए पहले दूसरों की बात को समझने का प्रयास करना चाहिए, फिर अपनी बात समझानी चाहिए। स्टीफन कोवे के अनुसार, अधिकांश लोग सुनते तो हैं, लेकिन वास्तव में समझने के इरादे से नहीं, बल्कि उत्तर देने के इरादे से। यह आदत हमें सहानुभूतिपूर्ण सुनने और गहरे समझने की शक्ति सिखाती है।

सहानुभूतिपूर्ण सुनना मतलब है कि हम पूरी तरह से दूसरों की बात पर ध्यान केंद्रित करें, उनकी भावनाओं और दृष्टिकोण को समझें, और बिना किसी पूर्वाग्रह के उनकी बात को सुनें। यह दृष्टिकोण न केवल गहरे संबंध बनाने में मदद करता है, बल्कि आपसी विश्वास और सम्मान भी बढ़ाता है।

उदाहरण के लिए, किसी टीम मीटिंग में, जब एक सदस्य अपनी चिंता व्यक्त करता है, तो हमें पूरी तरह से उसकी बात को सुनना चाहिए, उसके दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करनी चाहिए, और फिर अपनी प्रतिक्रिया देनी चाहिए। इस प्रकार का सुनना समस्या के गहरे कारणों को समझने और अधिक प्रभावी समाधान खोजने में मदद करता है।

"पहले समझने की कोशिश करें, फिर समझाएं" आदत से हमें पता चलता है कि प्रभावी संचार का आधार समझ है। यह आदत हमें सहानुभूतिपूर्ण श्रोता बनने और दूसरों के साथ गहरे और सार्थक संबंध बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। इससे हम बेहतर तरीके से संवाद कर सकते हैं और अधिक प्रभावी ढंग से अपने विचारों को व्यक्त कर सकते

छठी आदत: तालमेल बैठाएँ

छठी आदत "तालमेल बैठाएँ" का मतलब है कि हमें टीमवर्क और सहयोग से ऐसे समाधान खोजने चाहिए जो अकेले काम करने से बेहतर हों। स्टीफन कोवे के अनुसार, सीनर्जी का मतलब है कि मिलकर काम करने से हम उन परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं जो हम व्यक्तिगत रूप से कभी हासिल नहीं कर सकते। यह आदत रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करती है।

सीनर्जी का मुख्य सिद्धांत है कि "पूरा उसके भागों के योग से बड़ा होता है।" जब लोग अपने विभिन्न दृष्टिकोणों, अनुभवों, और ताकतों को मिलाते हैं, तो वे अधिक प्रभावी और रचनात्मक समाधान निकाल सकते हैं। यह दृष्टिकोण समस्याओं के समाधान और लक्ष्य प्राप्ति में अधिक प्रभावी होता है।

उदाहरण के लिए, एक परियोजना पर काम करते समय, यदि टीम के सभी सदस्य अपनी-अपनी विशेषज्ञता और विचार साझा करते हैं, तो वे एक ऐसा समाधान खोज सकते हैं जो एक व्यक्ति अकेले नहीं सोच सकता था। सीनर्जी का उपयोग करने से टीम के प्रत्येक सदस्य की प्रतिभा का अधिकतम उपयोग होता है और परिणामस्वरूप उच्च गुणवत्ता वाले समाधान प्राप्त होते हैं।

"सीनर्जी का उपयोग करें" आदत हमें सिखाती है कि सहयोग और साझेदारी से हम अपनी क्षमता को अधिकतम कर सकते हैं। यह आदत हमें टीमवर्क को महत्व देने, दूसरों के दृष्टिकोण का

सम्मान करने, और मिलकर काम करने के लाभों को पहचानने में मदद करती है। इससे हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

सातवीं आदत: आरी को तेज रखें

सातवीं आदत "आरी को तेज रखें" का मतलब है कि हमें अपने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए ताकि हम अपनी प्रभावशीलता को बनाए रख सकें और बढ़ा सकें। स्टीफन कोवे के अनुसार, आत्म-नवीनीकरण और निरंतर सुधार के बिना, हम जल्द ही थकावट और निराशा का शिकार हो सकते हैं।

इस आदत में चार मुख्य आयामों का ध्यान रखा गया है:

1. **शारीरिक:** नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और पर्याप्त नींद।
2. **मानसिक:** अध्ययन, पढ़ाई और नए ज्ञान और कौशल को प्राप्त करना।
3. **भावनात्मक:** स्वस्थ संबंध, परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना और अपनी भावनाओं को सकारात्मक रूप से प्रबंधित करना।
4. **आध्यात्मिक:** ध्यान, प्रार्थना, प्रकृति में समय बिताना और अपने जीवन के उद्देश्य को समझना।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो नियमित रूप से व्यायाम करता है, ध्यान करता है, किताबें पढ़ता है और अपने प्रियजनों के साथ समय बिताता है, वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने में अधिक सक्षम होता है। आत्म-देखभाल के इन चार आयामों पर ध्यान देने से व्यक्ति अधिक ऊर्जा, स्पष्टता और संतुलन प्राप्त करता है।

"आरी को तेज रखें" आदत हमें हमारे जीवन में संतुलन बनाए रखने और लगातार खुद को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करती है। यह आदत हमें याद दिलाती है कि हमें खुद का ख्याल रखना चाहिए ताकि हम अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। यह न केवल हमारी प्रभावशीलता बढ़ाती है बल्कि हमारे जीवन को अधिक संतोषजनक और सुखद बनाती है।

स्टीफन आर. कोवे की पुस्तक का सारांश इन सात आदतों में निहित है, जो व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता और संतुलन प्राप्त करने के लिए एक गहन मार्गदर्शिका प्रदान करती हैं।

पहली आदत, प्रोएक्टिव बनें, हमें सिखाती है कि हम अपने जीवन की जिम्मेदारी स्वयं लें और सक्रिय रूप से अपनी परिस्थितियों को नियंत्रित करें। दूसरी आदत, अंत को ध्यान में रखकर शुरू करें, हमें अपने लक्ष्यों और दृष्टि को स्पष्ट करने और अपने कार्यों को उसी के अनुसार दिशा देने की प्रेरणा देती है। तीसरी आदत, पहले महत्वपूर्ण चीजें करें, हमें समय प्रबंधन और प्राथमिकता देने का महत्व समझाती है।

चौथी आदत, जीत-जीत सोचें, हमें हर परिस्थिति में ऐसे समाधान तलाशने के लिए प्रेरित करती है जिनसे सभी पक्षों को लाभ हो। पांचवीं आदत, पहले समझने की कोशिश करें, फिर समझाएं, हमें प्रभावी संचार और सहानुभूतिपूर्ण सुनने का महत्व सिखाती है। छठी आदत, सीनर्जी का उपयोग करें, हमें टीमवर्क और सहयोग के माध्यम से बेहतर समाधान खोजने की शक्ति सिखाती है। सातवीं आदत, आरी को तेज रखें, हमें हमारे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करती है।

इन आदतों को अपनाकर हम न केवल अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में अधिक प्रभावी हो सकते हैं, बल्कि संतुलन और संतोष भी प्राप्त कर सकते हैं। यह पुस्तक हमें सिखाती है कि वास्तविक प्रभावशीलता केवल कार्यक्षमता से नहीं, बल्कि सही मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित जीवन से आती है।

कोवे की यह पुस्तक एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें आत्म-सुधार, प्रभावी संबंध और जीवन में संतुलन बनाए रखने के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है। इन सात आदतों के माध्यम से, हम अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं और एक संतुलित, सफल और संतोषजनक जीवन जी सकते हैं। "अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें" एक प्रेरणादायक और व्यावहारिक मार्गदर्शिका है जो हमें जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायता करती है।

खुशहाल ज़िंदगी

हेना परवेज़
अधिकारी
थर्मल पावर स्टेशन शाखा
बोकारो अंचल

"हमारी अंतरात्मा धन-वैभव, ऐशो-आराम या सत्ता के लिए ललायित नहीं है, ये सब भौतिक सुख हमें जितना सूकून देते हैं, उतनी ही समस्याएँ और उलझने भी देते हैं। वास्तव में हमारी आंतरिक भूख हमारे जीवन के अर्थ और उसे जीने के महत्व को जानने की जिज्ञासा के बारे में है, यह इस बारे में है कि दुनिया में एक अरसा रहकर जब हम गुजर जाएगें तो क्या कुछ फ़र्क डालकर जा पाएँगे।" -हरोल्ड कुशनेर

बचपन से सामाजिक अध्ययन की किताबों में पढ़ते आ रहे हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। लोगों का एक-दूसरे के पास बैठकर सुख-दुख की बातें करना, अपने जीवन के अनुभवों को साझा करना, वर्तमान की उलझनों और भविष्य की चिंताओं पर विचार-विमर्श करना दैनिक जीवन का अहम हिस्सा रहा है। लेकिन आज आर्थिक विकास की ज़द में हमने तकनीक के विकास को जीवन का अहम अंग मान लिया है। तकनीकी युग के कई फायदे हैं तो कई नुकसान भी हैं। इस युग में लोगों को मोबाइल टीवी, कम्प्यूटर भेंट में मिले हैं। इन उपकरणों ने मनुष्य का काम कई गुणा आसान कर दिया है परन्तु इसके कुछ दुष्प्रभावों ने भी हमें जकड़ लिया है। मोबाइल के आने से लोग इस कदर उसमें व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास किसी से बैठकर बात करने तक का समय नहीं हैं, न ही अपने आस-पड़ोस का उन्हें ज्ञान है। जब भी समय मिलता वे बस मोबाइल की वर्चुअल दुनिया में खो जाते हैं। यही कारण है आज के युग में बढ़ते डायबिटीज, ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों का। इन्हीं बीमारियों में से एक है मानसिक तनाव। बचपन से जीवन के अंत तक धीमे-धीमे ये बीमारी अपना घर बनाती रहती है और कभी-कभी तो इतना विकराल रुप धारण कर लेती है कि मनुष्य इससे अपनी ज़िन्दगी को हार बैठते है और मौत को गले लगा लेते हैं। वास्तव में देखा जाए तो इन्सानों को नजदीक लाने का दावा करने वाले सोशल मीडिया ने हमें भावनात्मक रूप से थका दिया है। हम डिजिटल दुनिया में हो रही घटनाओं में इतने उलझ गए हैं कि अपने स्वयं और अपने आस-पास के लोगों की फिक्र करने के लिए हमारे पास समय और आत्मिक ऊर्जा दोनों की कमी हो गई है। टोनी रोब्बिंस का कथन है कि "हमारे रिश्तों की गुणवत्ता ही जीवन की कसौटी है, संतुष्टि के बगैर मिली सफलता हकीकत में सबसे बड़ी असफलता होती है। जीवन में उपलब्धियां अधिक मायने नहीं रखती, बल्कि उन उपलब्धियों तक पहुँचने में अनुभव मिले, जो रास्ता तय किया वह अधिक महत्वपूर्ण होता है।"

बच्चे आम तौर पर 2-3 वर्ष की आयु से ही स्कूल जाना शुरु कर देते हैं। ये आयु उनकी खेलने-खिलखिलाने की होती है किंतु उन पर जबरदस्ती किताबों का बोझ डाल दिया जाता है। बेचारा बच्चा! करे भी तो क्या? चुप-चाप सब सहता रहता है। धीरे-धीरे वह बच्चा अपनी कक्षाओं में आगे बढ़ता जाता है। वर्ग के साथ किताबों की संख्या भी उसी संख्या में बढ़ती चली जाती है। एक ओर इस पढाई का बोझ, दूसरी ओर कक्षा में अव्वल आने की होड़। खेल-कूद तो उनके जीवन से जैसे विलुप्त ही हो चुके होते हैं। अपने माता-पिता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की चिन्ता उन्हें धीमे-धीमे तनाव का शिकार बनाने लगती है। जो बच्चा कभी चहका करता था वो अब बिल्कुल शांत रहने लगता है। और कहीं दसवीं या बारहवीं में उसे एकाध नंबर अगर कम आ गए तो माता-पिता की डांट तथा समाज से फटकार, उसे जीने नहीं देती। वह बच्चा जाए भी तो कहाँ? किसे बताए अपने दिल की बात? कौन है जो उसे सुनेगा और समझायेगा? जेस लेयर का कथन है कि 'बच्चे कोई ऐसी वस्तु नहीं हैं जिन्हें आप आकार दे सकते हैं, वे तो इंसान हैं जिन्हें अपनी पहचान खुद उजागर करनी है।'

इसी उधेड़-बुन में फँसकर वह बच्चा अपने अंदर पनपते तनाव को बढ़ावा दे बैठता है। वो हर वक्त सोचता रहता है। तनाव जब निश्चित सीमा में रहता है तो अच्छा परिणाम दिलाता है, किन्तु किसी भी अन्य चीज की तरह अत्यधिक तनाव भी हानिकारक है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में हर व्यक्ति की चाहत होती है कि वह किसी मुकाम तक पहुँचे। असफल रहने पर वह इस बात को बर्दाश्त नहीं कर पाता और गलत रास्ते अपनाने पर आतुर हो जाता है। आईआईटी-जेईई, नीट जैसी परीक्षाएं इस आग को और हवा देने का काम करती हैं। आज के बच्चे इन परीक्षाओं में हासिल सफलता को ही जीवन की सफलता मान लेते हैं। असफल होने पर बिना कुछ सोचे-समझे अपनी इस खूबसूरत सी ज़िंदगी को गँवा बैठते हैं। क्या ये सही है? और इन सब में कहीं न कहीं अहम भूमिका होती है तनाव की। ये बीमारी बचपन से युवावस्था तक पूर्ण रुप से अपना घर बना चुकी होती है। अब ये सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा आदि लक्षणों के सहारे उजागर होने लगता है। अक्सर लोग इन्हें अनदेखा कर देते हैं परन्तु लंबे समय तक बने रहने पर यही हृदय रोग, मोटापा जैसी गंभीर बीमारियों के रुप में घातक साबित होते हैं।

स्कूल, कॉलेज के बाद जब बच्चा नौकरी करना शुरु करता है तो शुरुआत में उसे अत्यंत ख़ुशी होती है। समय बीतता जाता है और वह काम के बोझ तले अपने आस-पास की दुनिया को भूल जाता है। सुबह लेट तक सोना, व्यायाम न करना, फिर हड़बड़ी में ऑफिस दौड़ना और शाम को ऑफिस से लौटकर मोबाइल को अपना साथी बना लेना। ये कहाँ तक सही है? प्राचीन युग में आपस में मिलना-जुलना, हँसना-खिलखिलाना न जाने हमारे मस्तिष्क को कितना तनाव मुक्त कर देता था। हम हर वक्त तरो ताज़ा और ऊर्जा से भरा हुआ महसूस किया करते थे। ये बीमारियाँ जो आज प्राय: हर घर में मौजूद हैं, पहले के लोग इनके नाम तक से अवगत नहीं थे। क्या मनुष्य ऐसी ज़िन्दगी की कल्पना किया करता था?

जिंदगी जीने का नाम है और इसे तनाव मुक्त और खुशहाल बनाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। रात के बाद उजियारा यही ज़िन्दगी का सच है। परेशानियाँ तो आती-जाती रहेंगी। समाज को तनाव मुक्त बनाने के लिए माता-पिता का यह दायित्व बनता है कि बच्चों को उतना ही स्नेह दें जिसमें वह बिगड़े नहीं। कई बार अपेक्षाओं पर खरा न उतरने पर छात्र आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। प्रतिस्पर्धा के इस युग में माता-पिता को भी समझना होगा। बच्चों पर किसी प्रकार का मानसिक दबाव बनाने की जगह उनका सही मार्गदर्शन कर उनका साथी बनना होगा। ज़िन्दगी हार-जीत का नाम है। असफल होने पर भी हममें हीन भावना नहीं आनी चाहिए। निरंतर प्रयास ही सफलता की कुंजी है। अगर करियर का एक रास्ता बंद होता है तो अनेक विकल्प उप्लब्ध हैं। और सबसे जरुरी बात स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मष्तिष्क का वास होता है। इसलिए निरंतर व्यायाम और योग करें, पौष्टिक आहार लें, खुल कर दोस्तों से मिलें, हँसें-खिलखिलायें, ये ही जीवन का मूल मंत्र है।

नई ऊर्जा का संचार करें

नवयुग की इस नव बेला में
नई ऊर्जा का संचार करें।

फैला कर पंख ख़्वाबो के
सपनों को साकार करें।

चाहे जितनी भी हो बाधा
हिम्मत जुटा कर पार करें।

मन की कुंठा को करें पराजित
आशाओं का नवाचार करें।

नवयुग की इस नव बेला में
नई ऊर्जा का संचार करें।

गिरकर भी उठना है हमको
नव पथ पर चलते जाना है।

बिना रुके बिना थके
जीवन को सरल बनाना है।

अब आओ चलो हुंकार भरें
नवयुग की इस बेला में
नई ऊर्जा का संचार करें ?

अभिषेक रंजन
वरिष्ठ प्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया
गोवा आंचलिक कार्यालय

मैदानः भारतीय फुटबाल का सुनहरा युग और पश्चिम बंगाल में फुटबाल का महत्व

कुमारी शिल्पी
प्रबंधक
अस्ति वसूली विभाग
बारासात अंचल

बॉलीवुड ने हमेशा से ही फिल्मों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। खेलों पर आधारित फिल्में हमारे सिनेमा जगत में हमेशा से आकर्षण का केंद्र रही हैं। 'लगान' से लेकर 'चक दे इंडिया', 'भाग मिल्खा भाग', 'दंगल', 'मैरी कॉम', 'पान सिंह तोमर' आदि फिल्मों ने न केवल दर्शकों को मनोरंजन परोसा है बल्कि उनकी मानसिकता को भी प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाई है। खेल आधारित फिल्मों की इस कड़ी में "मैदान" नामक डॉक्युमेंट्री फिल्म भी जुड़ गई है, जो भारतीय फुटबॉल के सुनहरे युग और पश्चिम बंगाल में फुटबॉल के महत्त्व पर आधारित है। यह फिल्म 'अमित रविन्द्रनाथ शर्मा' द्वारा निर्देशित और 'अजय देवगन' अभिनीत एक खेल कोच की जीवनी पर बनी है। इस फिल्म में खेल के प्रति ईमानदारी से कार्य करने वाले व्यक्ति के सामने आने वाली राजनीतिक बाधाओं, मीडिया आलोचनाओं और क्षेत्रीय पक्षपात को अच्छी तरह से दर्शाया गया है। फिल्म का नायक कथानक की कसौटी पर खरा उतरते हुए लोगों की भावनाओं को उद्वेलित करने में कामयाब हुआ है। इस फिल्म ने न केवल खेल प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया बल्कि भारतीय समाज में खेल के महत्व को भी रेखांकित किया है।

"मैदान" फिल्म भारतीय फुटबॉल के उस युग की कहानी बताती है जब भारत ने एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता था और ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन किया था। यह फिल्म सैयद अब्दुल रहीम के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने भारतीय फुटबॉल को वैश्विक मानचित्र पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह युग भारतीय फुटबॉल के लिए गर्व का विषय है और इस डॉक्युमेंट्री ने इसे एक बार फिर जीवंत कर दिया है। पश्चिम बंगाल में फुटबॉल न केवल एक खेल है बल्कि एक जुनून है। इस राज्य में फुटबॉल का एक समृद्ध इतिहास है और यह बंगाली समाज का अभिन्न हिस्सा है। "मैदान" फिल्म ने इस जुनून को और गहराई से उजागर किया है। पश्चिम बंगाल के लोगों की फुटबॉल के प्रति दीवानगी, उनकी भावनाएँ और इस खेल के प्रति उनकी निष्ठा को इस फिल्म ने बखूबी दर्शाया है। यहाँ का हर बच्चा फुटबॉल के मैदान में खेलना चाहता है और यह खेल यहाँ की संस्कृति और समाज में रचा-बसा है।

"मैदान" जैसी डॉक्युमेंट्री फिल्में समाज में खेल के महत्व को बढ़ावा देती हैं। ये फिल्में युवाओं को प्रेरित करती हैं और उन्हें यह संदेश देती हैं कि मेहनत और समर्पण से वे भी बड़े लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। सैयद अब्दुल रहीम की कहानी यह सिखाती है कि कैसे एक व्यक्ति अपने संघर्ष और दृढ़ संकल्प से समाज में बदलाव ला सकता है। इस फिल्म ने खेल को एक करियर विकल्प के रूप में भी प्रस्तुत किया है, जो भारतीय समाज की सोच में एक सकारात्मक परिवर्तन है। फुटबॉल जैसे खेलों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। ये खेल लोगों को एकजुट करते हैं, अनुशासन सिखाते हैं और स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करते हैं। "मैदान" फिल्म ने इस बात को स्पष्ट किया है कि कैसे फुटबॉल ने पश्चिम बंगाल के समाज को एक सूत्र में बाँधा है। खेल के माध्यम से समाज में भाईचारा, सहयोग और समानता की भावना विकसित होती है।

इस फिल्म ने न केवल खेल प्रेमियों को प्रेरित किया है बल्कि समाज में खेल के प्रति जागरूकता और सम्मान को भी बढ़ावा दिया है। बॉलीवुड की ऐसी फिल्में समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम बन सकती हैं और खेलों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं और यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि "मैदान" जैसी डॉक्युमेंट्री फिल्में समाज के परिप्रेक्ष्य से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

रील की शाश्वत कथा

अनिता कुमारी चौहान
वरिष्ठ प्रबंधक
सामान्य परिचालन विभाग
प्रधान कार्यालय

आज डिजिटल क्रान्ति के इस युग में अनेक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। इनमें से कई लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइटों पर छोटे-छोटे विडियो क्लिप्स मैसेज का फीचर शॉर्ट, रील आदि नामों से प्रचलित है। ये लघु मनोरंजक वीडियो क्लिप हमारा ध्यान खींचने और घंटों तक स्क्रॉल करते रहने के लिए मजबूर कर देते हैं। सोशल मीडिया पर मनोरंजन का यह माध्यम अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका है। अपनी 15-60 सेकंड की सामग्री के अंशों के साथ वे हमारे दैनिक जीवन की हलचल को प्रस्तुत करते हैं। लेकिन मनोरंजन का ये माध्यम कब हमारे लिए व्यसन में बादल जाता है हमें पता ही नहीं चलता और फिर हम पाते हैं कि बहुत अधिक समय व्यर्थ हो चुका होता है। लेकिन अब समय आ गया है कि हम इस मनोरंजक सोशल मीडिया माध्यम की छिपी हुई लागतों के बारे में जाने। सोश्ल मीडिया के बारे में अमेरिकी लेखक निकोला कर का मत है कि

"इंटरनेट की संवादशीलता हमें जानकारी खोजने, स्वयं को अभिव्यक्त करने और दूसरों से जुड़ने के लिए शक्तिशाली उपकरण उपलब्ध करवाती है, लेकिन यह हमें प्रयोगशाला के उन चूहों में भी बदल देती है जो सामाजिक, मानसिक उत्कंठा को शांत करने वाले पोषण के टुकड़ों को पाने के लिए क्लिक करते रहते हैं।"

क्या आपने कभी सोचा है कि जब आप इन लघु मनोरंजक वीडियो की मैराथन में शामिल होते हैं तो आपके दिमाग पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? हालांकि ये अनेक विषयों पर आपका मनोरंजन करते हैं लेकिन अनेक शोधों में यह सिद्ध हुआ है कि अधिक समय सोशल मीडिया पर बिताने वाले लोगों में मानसिकअवसाद और बैचेनी की समस्या से ग्रसित होने की संभावना अधिक होती है। किशोरों एवं बच्चों पर इनके प्रभाव के बारे में भी अनेक सवाल उठ रहे हैं। हालांकि सोशल मीडिया व्यसन को अभी तक मानसिक विकार घोषित नहीं किया गया है, किन्तु 'डायग्नोस्टिक एंड स्टेटिस्टिकल मैनुअल' के हालिया संस्करण में इंटरनेट गेमिंग डिसोर्डर की दशा को भावी शोध का क्षेत्र प्रस्तावित किया है। अभी कुछ समय पहले अमेरिका के एक सर्जन डॉ. विवेक मूर्ति ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर चेतावनी के लेबल डालने की योजना लाने के लिए अनुरोध किया, उनका कहना है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर "सोशल मीडिया का संबंध किशोरों में बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से है" की चेतावनी डाली जानी चाहिए।

जब आप अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर स्क्रॉल कर रहे होते हैं तो अचानक एक मनमोहक लघु विडियों क्लिप आपके सामने आ जाती है। यह मंत्रमुग्ध कर देने वाला, प्रफुल्लित करने वाला या विचारोत्तेजक है और आप इसे देखने से खुद को रोक नहीं पाते हैं। इससे पहले कि आप समझ पाएँ कि आप खरगोश की तरह अजगर के बिल में गिर गए हैं, तब तक वीडियो दर वीडियो क्लिप आनी शुरू हो जाती हैं और समय आपके हाथ से फिसलता चला जाता है और आप स्वयं को घंटों तक बिना सोचे-समझे स्क्रॉल करते हुए पाते हैं। इसका प्रारंभिक दुष्प्रभाव उत्पादकता में कमी आ जाना है, हमारी एकाग्रता में बाधा आ सकती है और यहां तक कि हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसका असर पड़ सकता है। रीलों की बार-बार खपत महत्वपूर्ण कार्य या अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने और ध्यान बनाए रखने की आपकी क्षमता में बाधा डाल सकती है। यह विकर्षण की एक निरंतर बाढ़ की तरह है जो आपकी एकाग्रता को छिन्न-भिन्न कर देती है। लघु वीडियो क्लिप्स हमारा ध्यान खींचने और हमें बांधे रखने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। हर बार जब हम कोई नई रील देखते हैं तो हमारा मस्तिष्क खुशी और पुरस्कार से

जुड़ा एक न्यूरोट्रांसमीटर डोपामाइन छोड़ता है। यह वही रसायन है जो तब निकलता है जब हम स्वादिष्ट खाना खाते हैं, तारीफ पाते हैं या व्यक्तिगत लक्ष्य हासिल करते हैं। हम उस तत्काल संतुष्टि के आदी हो गए हैं और उस डोपामाइन रश को प्राप्त करने के लिए अधिक से अधिक मनोरंजक लघु वीडियो क्लिप्स की लालसा करने लगते हैं। हालाँकि इस लत की कीमत हमें समय और स्वास्थ्य का नुकसान करके चुकानी पड़ती है। जब हम इन विडियों क्लिप्स की दुनिया में खो जाते हैं तो हमारा वास्तविक जीवन कष्ट भोगता है। हम काम पर कम केंद्रित और कम उत्पादक हो जाते हैं क्योंकि हमारा दिमाग अगले लुभावने वीडियो पर चला जाता है। हम मनोरंजन और उत्तेजना के तीव्र झोंकों के आदी बन जाते हैं जिससे धीमी गति की गतिविधियों में आनंद मिलना बंद हो जाता है। यदि हमारे फोन की बैटरी समाप्त हो जाए तो हम ऊबने लगते हैं और बेचैन हो जाते हैं। आजकल हर चीज़ का ऑनलाइन फीडबैक लेने की प्रथा पर एक कनेडियन उद्योगपति चमथ पालीहापीतिया का कहना है कि

"हमने जो डोपामाइन-चलित अल्पकालिक फीडबैक लूप बनाए हैं, वे हमारी सामाजिक व्यवस्था को बर्बाद कर रहे हैं। नागरिकों से संवाद नहीं, आपसी सहयोग की कोई भावना नहीं, ये गलत सूचना और झूठ का भंडार हैं।"

अगली क्लिप की तलाश ऐसी हो गई है जो चक्र के दोहराने से पहले कुछ सेकंड के लिए हमें मोहित कर लेती है। हमारा ध्यान बट जाता है और रोजमर्रा की जिंदगी की सुंदरता की सराहना करने की हमारी क्षमता निरंतर कम होती जाती है। लघु वीडियो क्लिप्स का प्रारूप ध्यानाकर्षण की सामग्री देखने को प्रोत्साहित करता है जहां सामग्री एक स्थायी प्रभाव छोड़े बिना आपके ऊपर हावी हो जाती है। जुड़ाव की यह कमी नासमझी की भावना पैदा कर सकती है, जिससे आप बिना किसी उद्देश्य के स्क्रॉल करते रहते हैं और आपकी संज्ञानात्मक क्षमताओं और फोकस को यह नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह एक डिजिटल व्याकुलता को जन्म देती है जो आपकी उत्पादकता को पटरी से उतार देती है और अंतत: आपको अधूरापन महसूस करा सकती है। इन विडियो क्लिप्स पर बिताए जाने वाले अपने समय पर नियंत्रण कर पाना न केवल संभव है, बल्कि जरूरी भी है।

विशेष रूप से छोटे बच्चों को इसकी लत लग जाती है तथा उनमें इसके प्रति व्याकुलता की भावना विकसित हो जाती है। अक्सर आकर्षक संगीत और जीवंत दृश्यों के साथ लघु वीडियो देखने का अनिवार्य व्यवहार बच्चों में विकसित हो जाता है, जिससे देखने के समय और अक्षमता में वृद्धि हो सकती है। बच्चों को नींद, शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक मेलजोल पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। गंभीर विचार और समस्या सुलझाने का कौशल बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है, लेकिन वीडियो देखने की निष्क्रिय प्रकृति विकास में बाधा का कारण बन सकती है। कम अवधि और तीव्र सामग्री परिवर्तन से बच्चों में एकाग्रचित रहने की अवधि भी कम हो जाती है। स्क्रीन के सामने स्क्रीन का समय बढ़ने से व्यक्तिगत बातचीत में कमी आ सकती है और आवश्यक संचार कौशल के विकास में बाधा आ सकती है। इससे बचपन और बाद में जीवन में संबंध बनाने और बनाए रखने में कठिनाई हो सकती है। हालाँकि सरकार को बच्चों पर डिजिटल सामग्री उपभोग के दीर्घकालिक प्रभावों को बेहतर ढंग से समझने के लिए अनुसंधान में निवेश करना चाहिए। यह ज्ञान साक्ष्य आधारित नीतियों के विकास में मदद करता है जिसका उद्देश्य युवाओं के हितों की रक्षा करना है।

लघु वीडियो क्लिप्स मनोरंजन का नवीन रूप हैं, उनकी क्षमताएँ असीमित हैं, जबकि वे बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में भी सहायता करती हैं, लेकिन उनके नकारात्मक पक्ष को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। माता-पिता की जागरूकता और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग के साथ सरकार का हस्तक्षेप डिजिटल जुड़ाव और हमारे बच्चों की समग्र भलाई के बीच एक स्वस्थ संतुलन सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। अब समय आ गया है कि इन लघु वीडियो क्लिप्स के अंधेरे पक्ष को संबोधित किया जाए और भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया जाए, जहां हमारे बच्चे और युवा बौद्धिक रूप एवं भावनात्मक रूप से विकसित हो सकें।

बैंक ऑफ इंडिया परिवार के संग 25 वर्षों की रिश्तों की जमापूंजी

अनीता रमेश नायर
उप महाप्रबंधक
बेंगलुरु आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 28.03.1989

संजय शंकर कदम
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ – पुणे
का.ग्र.ति: 27.02.1992

हरदीप सिंह रत्तन
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 03.04.1992

के.एस.बी. चंद्रमौली
उप महाप्रबंधक
जमशेदपुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 12.01.1994

बिजोय कुमार मालिक
उप महाप्रबंधक
भुवनेश्वर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

सनत कुमार सत्पथी
उप महाप्रबंधक
कोलकाता आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 02.01.1995

एम.वी.वी. बंगारराजू
उप महाप्रबंधक
विजयवाड़ा आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 03.02.1995

नरेंद्र कुमार
उप महाप्रबंधक
हजारीबाग आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 17.04.1995

कृष्ण देव शर्मा
उप महाप्रबंधक
न्यूयॉर्क शाखा
का.ग्र.ति: 24.02.1997

शैलेंद्र प्रसाद
उप महाप्रबंधक
मुजफ्फरपुर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

संपत कुमार बोरूगड्डा
उप महाप्रबंधक
कोयंबटूर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

तुषार श्रीपद हाटे
उप महाप्रबंधक
मुंबई दक्षिण आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 24.02.1997

विजय कुमार वर्मा
उप महाप्रबंधक
ग्रामीण बैंक-आरआरबी
का.ग्र.ति: 24.02.1997

गोविंद प्रसाद सारदा
उप महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय
का.ग्र.ति: 16.03.1998

रवि कुमार मिश्रा
उप महाप्रबंधक
एलसीबी – बेंगलुरु
का.ग्र.ति: 16.03.1998

विनायक शुक्ला
उप महाप्रबंधक
मुंबई लार्ज कॉर्पोरेट शाखा
का.ग्र.ति: 16.03.1998

राजेश कुमार
उप महाप्रबंधक
एफ़जीएमओ- कोलकाता
का.ग्र.ति: 01.06.1998

मारेथी मोहन
उप महाप्रबंधक
चेन्नई आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 08.10.1998

कुमार राजेश
उप महाप्रबंधक
इंदौर आंचलिक कार्यालय
का.ग्र.ति: 15.04.1999

चित्र काव्य प्रतियोगिता का चित्र

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली अधिकतम 50 शब्दों की कविता लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ कविता के रचियता का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

मार्च 2024 अंक के चित्र काव्य प्रतियोगिता के विजेता

अर्थव्यवस्था की आधार, गाय हमारी जीवनाधार।

अगर किसान पाल ले इसको, कर दे उसको मालामाल।

पंचगव्य का स्रोत है सुंदर, गाय हमारी प्राणाधार।

स्वर्ण युक्त है दूध इसका, स्वास्थ्य का है भंडार।

किसान करें उपयोग इसका, लहरा दे खेत खलिहान।

देवों का है वास इसमें, कर देती ये हमें निहाल।

सारी चीजें हैं उपयोगी, लाभ उठा ले ये संसार।

गहरा रिश्ता गोधन से है, किसान करें नहीं इंकार।

अर्थव्यवस्था की आधार , गाय हमारी जीवनाधार।

उषा
शाखा प्रबंधक
नुंगम्बाक्कम शाखा
चेन्नई अंचल

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर

अंकुश वर्मा
अधिकारी-क्रेडिट,
पंचकुला शाखा,
चंडीगढ़ अंचल

"अतीत से मिली हुई धरोहर, मात्र विरासत नहीं है बल्कि हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण शक्ति है। एक इंसान का अपनी विरासत से वही रिश्ता होता है जो एक बच्चे का अपनी माँ से होता है। हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को सहेजकर रखना चाहिए क्योंकि वे ही वह आधार हैं जिस पर हमारा भविष्य टिका हुआ है। ऐतिहासिक इमारतें, कलाकृतियाँ, लोककथाएँ, परंपराएँ, भाषा और पीढ़ियों से चला आ रहा मौखिक/लिखित ज्ञान हमारी सांस्कृतिक विरासत के अंश हैं। अपनी विरासत को संरक्षित करने का तात्पर्य है अपनी पहचान और अपने पूर्वजों की भावना को सजीव रखना। यह ध्यान रखते हुए कि आने वाली पीढ़ियाँ समझ पाएँ कि वे कहाँ से आए हैं, उनका अतीत क्या था ताकि वे अपने भविष्य को संवार सके और पीढ़ी दर पीढ़ी यह निरंतरता बनी रहे। यह बिल्कुल ऐसा है मानो एक हरे भरे पेड़ के फल-फूल अपनी जड़ों से निरंतर पोषण प्राप्त कर रहे हों।"

भारत के दक्षिणी राज्य केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के पूर्वी तट पर भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं पुरातात्विक धरोहर का प्रतीक श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर स्थित है जो भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर के बारे में मान्यता है कि यह दुनिया का सबसे वैभवशाली मंदिर है और इस मंदिर के स्वामी भगवान पद्मनाभ सबसे धनी देवता हैं। वास्तुकला की दृष्टि से यह मंदिर केरल और द्रविड़ शैलियों का मिश्रण है। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर का ज्ञात इतिहास आठवीं सदी से उपलब्ध है। यह भारत के 108 पवित्र विष्णु मंदिरों या दिव्य देसम (देवस्थानों) में से एक है। दिव्य देसम भगवान विष्णु के सबसे पवित्र पूजनीय स्थलों एवं उनके निवास का प्रतीक माना जाता हैं जिनका उल्लेख तमिल आळवारों (संतों) के साहित्य में विस्तार से किया गया है। इस मंदिर में पीठासीन देवता भगवान विष्णु अपने फन वाले नाग, पर अनंत विश्राम की मुद्रा में विराजमान हैं। त्रावणकोर के राजाओं में प्रसिद्ध राजा मार्तंड वर्मा ने 18 वीं सदी के मध्य में इस मंदिर का व्यापक स्तर पर जीर्णोद्धार करवाया, जिसमें श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर की वर्तमान संरचना बनकर तैयार हुई। आज हमारे सामने मंदिर का जो रूप है वह प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार का परिणाम है। राजा मार्तंड वर्मा ने प्रतिज्ञा की कि राजपरिवार भगवान की ओर से राज्य पर शासन करेगा तथा वह और उनके वंशज पद्मनाभ दास या भगवान पद्मनाभ के सेवक के रूप में राज्य की सेवा करेंगे। तब से हर त्रावणकोर राजा के नाम के पहले पद्मनाभ दास की उपाधि लगाई जाने लगी। पद्मनाभस्वामी को त्रावणकोर का राज्य दान करने की घटना को त्रिपदीदानम के नाम से जाना जाता है।

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम का नाम श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के मुख्य देवता से लिया गया है, जिन्हें अनंत (भगवान विष्णु का सर्प) के नाम से भी जाना जाता है। 'तिरुवनंतपुरम' शब्द का शाब्दिक अर्थ है - श्री अनंत पद्मनाभस्वामी की भूमि। मान्यता के अनुसार श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर उस स्थान पर स्थित है जिसे सात परशुराम क्षेत्रों में से एक माना जाता है । स्कंद पुराण और पद्म पुराण जैसे पुराणों में मंदिर का उल्लेख मिलता है। मंदिर पवित्र तालाब - पद्म तीर्थम के पास स्थित है, जिसका अर्थ है 'कमल का झरना'। वर्तमान में इस मंदिर का प्रबंधन त्रावणकोर के पूर्व शाही परिवार के नेतृत्व वाले एक ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के मुख्य देवता की प्रतिमा अपनी बनावट के लिए प्रसिद्ध है, इसमें 12008 शालग्राम हैं, जिन्हें नेपाल में गंधकी नदी के तट से लाया गया था। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर का

गर्भगृह एक पत्थर की पटिया पर स्थित है और 18 फीट लंबी मुख्य प्रतिमा के दर्शन तीन अलग-अलग दरवाजों से किया जा सकता हैं। पहले दरवाजे से सिर और वक्ष स्थल के दर्शन होते हैं; जबकि दूसरे दरवाजे से हाथ और तीसरे दरवाजे से पैरों के दर्शन किए जा सकते हैं। मंदिर की वास्तुकला में पत्थर और कांस्य का काम अविश्वसनीय है। मंदिर के अंदरूनी हिस्से खूबसूरत पेंटिंग और भित्तिचित्रों से सजाए गए हैं। उनमें से कुछ में लेटी हुई मुद्रा में भगवान विष्णु की आदमकद प्रतिमाएँ, नरसिंह स्वामी (भगवान विष्णु का आधा शेर, आधा मनुष्य अवतार), भगवान गणपति और गज लक्ष्मी हैं। मंदिर में एक ध्वज स्तंभ (ध्वज स्तंभ) है जो लगभग 80 फीट ऊँचा है और सोने की परत चढ़ी तांबे की चादरों से सुसज्जित है। बाली पीड़ा मंडपम और मुख मंडपम के रूप में कुछ दिलचस्प संरचनात्मक विशेषताएं भी हैं। ये हॉल विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं की सुंदर मूर्तियों से सजाए गए हैं। यहाँ का नवग्रह मंडप है जिसकी छत पर नवग्रह (नौ ग्रह) बहुत आकर्षक ढंग से निर्मित किये गए हैं। पूर्वी दिशा से गर्भगृह तक एक बड़ा गलियारा बनाया गया है जिसमें सुंदर नक्काशी वाले ग्रेनाइट-पत्थर के सवा तीन सौ पैसठ (365.25) स्तम्भ हैं। पूर्वी दिशा में मुख्य प्रवेश द्वार के नीचे एक भूतल है, जिसे नाटक शाला (शाब्दिक अर्थ नाटक हॉल) के रूप में जाना जाता है, जहाँ केरल की शास्त्रीय कला रूप - कथकली का प्रदर्शन मंदिर में वार्षिक दस दिवसीय उत्सव के दौरान किया जाता है, जो मलयाली महीनों मीनम और थुलम के दौरान आयोजित किया जाता है।

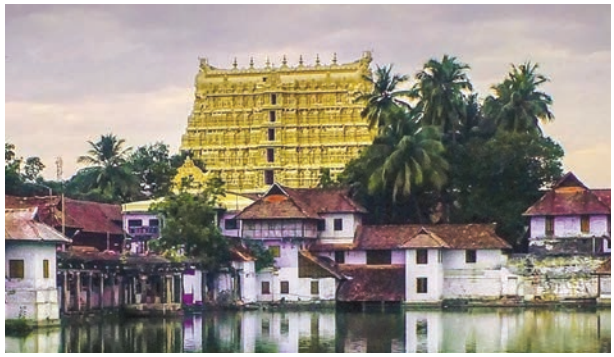

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर अपनी दान-संपदा के उजागर होने पर दुनिया भर में चर्चा का विषय बना। जून 2011 में, मंदिर के प्रबंधन में पारदर्शिता और मंदिर परिसर की जांच की मांग करने वाली अदालत में दायर याचिका के परिणामस्वरूप, श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के अंदर छह भूमिगत तहखाना पाए गए। छह में से, वे पांच को खोलने में कामयाब रहे, जिनमें से सोने के सिक्के, मूर्तियाँ, गहने, कीमती पत्थर, मुकुट और यहाँ तक कि सोने से बने सिंहासन जैसी प्राचीन चीजें निकलीं! यह संग्रह सोने और कीमती पत्थरों से बनी वस्तुओं का अब तक का सबसे बड़ा संग्रह माना जाता है। जो कुछ भी वे कर पाए, उसे सूचीबद्ध करना एक बहुत बड़ा काम रहा होगा। दुनिया भर के लोगों ने कई अनुमान लगाए क्योंकि सूची का पूरा विवरण कभी सामने नहीं आया। छह तहखानों में से, केवल पाँच को ही बहुत संघर्ष के बाद खोला जा सका, क्योंकि उन पर बहुत बड़े ताले लगे थे, जिससे तहखानों को दुनिया से छिपाए रखने में सफलता मिली। वहां मिली कुछ वस्तुए जैसे- महाविष्णु की 4-फुट ऊँची और 3-फुट चौड़ी ठोस शुद्ध-स्वर्ण प्रतिमा, जिसमें हीरे और कीमती पत्थर जड़े हुए थे; ठोस सोने का सिंहासन, जो देवता की 18-फुट की मूर्ति को रखने के लिए था; हज़ारों शुद्ध सोने की चेन, जिनमें से एक 18-फुट लंबी थी; रोमन साम्राज्य और मध्यकालीन काल के सोने के सिक्कों से भरी बोरियाँ आदि। धन के उचित मूल्यांकन और शायद प्रबंधन में बदलाव के लिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की गई थी। हालांकि, 2020 में, शाही परिवार ने लड़ाई जीत ली और मंदिर और उससे जुड़ी हर चीज़ के प्रबंधन पर उनका एकमात्र अधिकार बना रहा।

अनेक कोशिशों के बावजूद मंदिर के तहखाना बी कभी नहीं खोला जा सका। ऐसा माना जाता है कि वॉल्ट बी पर कुछ अलौकिक शक्तियाँ पहरा देती हैं। यह भी मान्यता है कि यदि इस रहस्यमयी वॉल्ट को खोलने का प्रयास किया तो गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। कहा जाता है कि वॉल्ट बी के दरवाज़े के पीछे जो कुछ भी है, उसकी रक्षा ज़हरीले साँपों, पिशाचों और अलौकिक शक्तियों द्वारा की जाती है। जब मंदिर के कुछ अधिकारियों ने वॉल्ट का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, तब अचानक उन्हें लहरों की आवाज़ सुनाई दी और वे पीछे हट गए और हार मान ली। अब तक ज्ञात जानकारी के अनुसार मंदिर का खजाना सदियों से वहाँ है। चेर, पांड्या, पल्लव, चोल और कई अन्य साम्राज्यों ने श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर को उदारतापूर्वक दान दिया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर अथाह धन और रहस्य को अपने भीतर समाए हुए है और हमारे देश की बहुमूल्य धरोहर है।

आधुनिक दुनिया

विश्वजीत गुहा
आंचलिक प्रबंधक
हावड़ा अंचल

हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में यदि आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि कितनी तेजी से हम बादल रहे हैं। बदलाव तो हमेशा से होता आया है क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम है, लेकिन कुछ सालों पहले बदलाव तो होता था, साथ ही साथ ठहराव भी हुआ करता था। लेकिन आज दुनिया बहुत ही तेजी से बदल रही है। हमारी पीढ़ी के लोग पिछले कुछ वर्षों पर ध्यान देंगे तो आपको भी यह दिखेगा। चलिए कुछ ऐसे ही बदलावों पर नज़र डालते हैं।

आधुनिक जीवनशैली: तकनीक ही तानाशाह

आज का दौर तकनीकी प्रगति का है। हर किसी के पास स्मार्टफोन है, जो बेशक 'स्मार्ट' है, परंतु उसके उपयोगकर्ता कितने 'स्मार्ट' हैं, यह एक बड़ा सवाल है। उससे भी मजे की बात ये है कि फोन की स्मार्टनेस दिन-प्रतिदिन बढ़ रही जबकि फोन चलाने वालों की घट रही है। सुबह उठते ही हम अपने स्मार्टफोन की ओर हाथ बढ़ाते हैं, मानो वह चमत्कारी उपकरण हमें आज जीवन का अर्थ समझा देगा। हमारी सच्चाई तो यह है कि उसमें भी हम वो अलार्म बंद करते हैं जो हमने आज नई शुरुआत करने के लिए कल भरा था और फिर अगली रात भी हम इसी उम्मीद के साथ नया अलार्म भर देते हैं।

सोशल मीडिया: दिखावे की दौड़

सोशल मीडिया के आगमन ने तो जैसे हमारी दुनिया ही बदल दी है। पहले लोग अपनी भावनाओं को चिट्ठियों में व्यक्त करते थे, अब वे 'स्टेटस अपडेट' में करते हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म्स पर लोग अपनी जिंदगी को इतने सुन्दर और सुखमय तरीके से प्रदर्शित करते हैं कि देखने वाले को लगता है मानो इन लोगों को स्वर्ग प्राप्त हो गया है और इनकी जिंदगी में कोई समस्या ही नहीं है। हालांकि, सामान्य जनजीवन की हकीकत से हम सभी अवगत तो हैं ही, लेकिन फिर भी हकीकत को छिपाने और चमक-दमक दिखाने कि दौड़ में सभी शामिल हो जाते हैं।

फास्ट फूड: स्वाद की हानि

भोजन का तो कहना ही क्या। पहले लोग घर पर बना खाना पसंद करते थे, अब वे फास्ट फूड के दीवाने हो गए हैं। बर्गर, पिज्जा और नूडल्स जैसे खाद्य पदार्थों ने हमारी रसोई का रास्ता ही बंद कर दिया है। यह भोजन कितना 'फास्ट' है, यह तो नहीं पता, परंतु यह अवश्य है कि इससे स्वास्थ्य तेजी से गिरता है। फिर भी, लोग इसे इस प्रकार खाते हैं जैसे कि यह किसी चमत्कारी देवता का प्रसाद हो।

फिटनेस फ्रीक: जिम का जादू

फिटनेस का तो और भी गजब हाल है। लोग अब जिम जाने के लिए इतने उत्सुक हैं कि जैसे वे वहां किसी संत का दर्शन करने जा रहे हों। सुबह-सुबह उठकर लोग जिम में घंटों पसीना बहाते हैं, और फिर वापस आकर फास्ट फूड का सेवन करते हैं। यह देखकर समझ नहीं आता कि यह स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता है या फिर एक प्रकार की आत्म-प्रवंचना।

शिक्षा: डिग्रियों का खेल

शिक्षा प्रणाली भी अब एक व्यापार बन गई है। लोग शिक्षा को ज्ञान के साधन के बजाय नौकरी पाने के उपाय के रूप में देखते हैं। पहले लोग गुरु-शिष्य परंपरा का पालन करते थे, अब वे कोचिंग सेंटर्स का अनुसरण करते हैं। डिग्रियों का महत्व इतना बढ़ गया है कि ज्ञान पीछे छूट गया है। यह देखकर तो यही लगता है कि शिक्षा अब केवल एक प्रमाणपत्र पाने की दौड़ बनकर रह गई है।

पर्यावरण: दिखावा और वास्तविकता

पर्यावरण के प्रति हमारी चिंता भी केवल कागजों तक सीमित रह गई है। हम बड़े-बड़े सम्मेलन करते हैं, बड़े-बड़े वादे करते हैं, लेकिन जब अपने जीवन में कुछ बदलाव करने की बात आती है तो हम पीछे हट जाते हैं। प्लास्टिक का उपयोग बंद करने के बड़े-बड़े अभियान चलते हैं, लेकिन अगले ही पल हम प्लास्टिक की बोतल

से पानी पीते नजर आते हैं। यह दिखावा हमारे समाज की एक बड़ी विडंबना है।

तकनीकी शिक्षा: कोडिंग का क्रेज

आजकल तकनीकी शिक्षा का क्रेज भी चरम पर है। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा 'कोडिंग' सीखे। ऐसा लगता है जैसे कोडिंग सीखते ही बच्चा सीधे किसी मल्टीनेशनल कंपनी का सीईओ बन जाएगा। बच्चे भी इतनी कोडिंग सीख रहे हैं कि गणित और विज्ञान की किताबें धूल खा रही हैं। ऐसा माहौल बन गया है कि जो कोडिंग नहीं सीखता, वह जैसे समाज से बाहर हो जाता है।

यात्रा और पर्यटन: फोटो और फॉलोअर्स

यात्रा और पर्यटन का मकसद भी अब बदल गया है। पहले लोग नई जगहों की सुंदरता और संस्कृति को जानने के लिए यात्रा करते थे, अब वे केवल 'फोटो' और 'फॉलोअर्स' के लिए यात्रा करते हैं। सोशल मीडिया पर तस्वीरें पोस्ट करना और लोगों की वाहवाही बटोरना ही मुख्य उद्देश्य बन गया है। इससे यात्रा का असली मजा और सीखने का अनुभव कहीं खो सा गया है।

विज्ञान और तकनीक: रोबोट का रुझान

विज्ञान और तकनीक की प्रगति ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन इसके साथ ही हमें रोबोट बना दिया है। हर काम के लिए तकनीकी उपकरण हैं और हम इतने आलसी हो गए हैं कि छोटी-छोटी चीजों के लिए भी इन पर निर्भर रहते हैं। यह निर्भरता हमें मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर बना रही है, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं है।

रिश्ते: डिजिटल दूरी

रिश्तों की बात करें तो अब वे भी डिजिटल हो गए हैं। पहले लोग आमने-सामने बैठकर बातें करते थे, अब वे व्हाट्सएप और फेसबुक पर चैट करते हैं। भावनाएं इमोजी में बदल गई हैं और पत्रों की जगह अब 'टेक्स्ट मैसेज' ने ले ली है। इस डिजिटल युग में रिश्तों की गर्माहट कहीं खो गई है।

वर्तमान समय में तकनीक और आधुनिकता ने हमारी जिंदगी को बहुत प्रभावित किया है। यह सच है कि इससे हमारे जीवन में कई सुविधाएं आई हैं, लेकिन इसके साथ ही हमने बहुत कुछ खोया भी है। यह व्यंग्य हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं या फिर हमें अपने रास्ते पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। तकनीक का उपयोग सही तरीके से करने और वास्तविक जीवन की मूल्यों को समझने की जरूरत है। तभी हम एक संतुलित और सुखद जीवन जी सकते हैं।

ठहराव का नाम नही है जिंदगी...

यूं तो राह भटकाने को मंजिल से,
कई चौराहे कई बहाने मिलेंगे,
जिंदगी के हर मोड़ पर जाने,
मुश्किलों के अनजाने मुहाने मिलेंगे,
मंजिलें है तो मुश्किलों का दौर भी होगा,
पर चुनाव सही रास्ते का हमको,
खुद अपने विवेक से करना होगा,
ठहराव का नाम नहीं है जिंदगी,
सभी नाकामियों से उठ कर,
आगे बढ़ना होगा...चलना होगा।
दुनिया यूं ही नही दीवानी होगी,
काबिलियत ख़ुद में ही जगानी होगी,
कभी कांटों से हस के गुजरना होगा,
तो कभी सागर को भी गागर में भरना होगा,
चाहिए शीतल छांव जिंदगी की तो,
संघर्षों की धूप में भी जलना होगा,
जो देनी है सपनों को ऊंची उड़ान तो,
हौसलों को ही पंख बनाना होगा,
ठहराव का नाम नहीं है जिंदगी,
अतीत को भूल आगे बढ़ना होगा... चलना होगा।
मन की स्थिति जो लक्ष्य को ध्याएगी,
मंजिल भी एक दिन अपना पता बताएगी,
असफलताओं का दौर भले ही रास्ता रोके,
पर उम्मीद की हर किरण हौसला जगाएगी,
होगा सुराख आसमानों में भी,
तबीयत से बस पत्थर उछालना होगा,
चाहिए जो शोहरतों का सूरज तो,
बादलों को चीर चमकना होगा,
ठहराव का नाम नहीं है जिंदगी,
हर विफलता से सफलता की राह सजाकर,
आगे बढ़ना होगा...चलना होगा।

सुनील कुमार राऊत
अधिकारी
के.आई.स्टेट शाखा
धनबाद अंचल

कहकहे

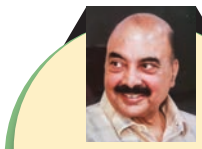

परमिंदर जस्सल
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया

- परीक्षा में दो पास होने वालों की बजाय, दो फेल होने वालों के बीच ज्यादा गहरी दोस्ती होती है।
- बीमार व्यक्ति की ऑक्सीजन ट्यूब हटा दो, या स्वस्थ व्यक्ति का मोबाइल छीन लो, एक ही बात है।
- पहले जिन हरकतों पर माताएं चप्पल लेकर आती थीं, आजकल कैमरा ले कर आती हैं।
- समोसे को टिश्यूपेपर से निचोड़ कर खाने पर पछतावा तो कम हो सकता है, लेकिन फैट और कोलेस्ट्रॉल नहीं।
- अर्धांगिनी को आधी अधूरी जानकारी देने पर ही जीवन के कष्ट आधे कम हो सकते हैं।
- एक साड़ी विक्रेता ने बोर्ड लगवाया कि 10 मिनट में साड़ी खरीदने पर 10% की छूट, अब वो बाज़ार का सबसे अमीर और स्वस्थ विक्रेता है।
- सिर्फ मादा मच्छर ही काटती है, नर तो भुनभुनाता रह जाता है।
- योग करने का पहला नियम, जुकाम वाले के आगे और गैस वाले के पीछे नहीं बैठना है।
- फायदा तो देखिए, बाहर निकला हुआ पेट मोबाइल साफ करने में बड़ा काम आता है।
- पकौड़े जब चीन से उच्च शिक्षा प्राप्त करके आए तो वे मंचूरियन कहलाने लगे।
- चुनावों के पहले से टीवी देखना बंद कर दिया था, अब बहुत स्वस्थ, प्रसन्न, निरोगी, मस्त व क्रियाशील हो गया हूं।
- अमीर मोटा हो जाए तो गोलू मोलू, गरीब का वजन बढ़ जाए तो सांड।
- डॉक्टर 7 दिन की दवाई लिखता है और हम लोग 5 दिन की खा कर सयाने बन जाते हैं।
- आम खाते वक्त मक्खियां ऐसे आ जाती हैं जैसे आम उनके क्रेडिट कार्ड से खरीदे हों।
- वज़न का गणित बड़ा विचित्र है, बढ़ अपने आप जाता है और घटाने के लिए 'योग' करना पड़ता है।
- आलसियों से चिढ़ा ना करें, वो बेचारे तो कुछ करते ही नहीं।
- महंगाई का कीड़ा रेहड़ी बाजार में सक्रिय रहता है, पिज्जा मंगाते समय सो जाता है।
- आराम करते करते थक गए हों तो थोड़ा आराम कर लें, फिर आराम से उठ कर पुन: आराम कर लें।
- पहली बार मायके आई बेटी ने मां को बताया: "मेरे ससुराल में किसी को घड़ी देखनी नहीं आती, मैं सो कर उठती हूं तो सब बोलते हैं कि देख टाइम क्या हुआ है!"
- तब तक हंसते मुस्कुराते रहिए, जब तक यमराज भैंसे समेत आ के सिर पर ना खड़े हो जाएं।

(* विभिन्न ऑनलाइन स्रोतों से संकलित)

मेरा प्यारा देश

हमें यूं ही नहीं आजादी मिली, ना जाने कितनों ने संयम, बलिदान और व्रत सहे।
सभ्यता और संस्कृति से जो सदैव जुड़े, वो मेरा आर्यावर्त रहे।।

विभिन्न धर्म, भाषा और प्रांत के होने पे भी, लोग जंहा समीप रहे।
ऐसा अनूठा, अनुपम और अनोखा, अपना जम्बूद्वीप रहे।।

विविधताओं से भरी इस धरा पर, हम सभी सहर्ष रहें।
है कामना ऐसी समृद्धि, विज्ञान, और विद्वजनों से भरा ये भारतवर्ष रहे।।

अंहिसा, शील, विनय, ज्ञान और शौर्य की ज्योति सदैव जंहा जाग्रत रहे।
वसुधैव कुटुम्बकम की भावना लिए, वो मेरा भारत महान रहे।।

अविचल, अविरल, अक्षुण्ण और अखण्ड जो स्थान रहे।
हो मानव सभ्यता जब तक, तब तक ये हिन्दुस्तान रहे।।

यूं ही हिन्द पांव पखारे और हिमालय भाल की बिंदिया बनकर रहे।
जग में जो तरक्की के नवपथ प्रशस्त करें, वो अपना इंडिया रहे।।

मुकुन्द झा
वरिष्ठ प्रबंधक
सतर्कता अधिकारी
हजारीबाग आंचलिक कार्यालय

स्वयं सहायता समूह

गीता, सीता और संगीता मिलकर,
एक साथ आगे बढ़े, प्रगति के पथ पर,

औपचारिक बैठक कर तैयार किया संगठन,
संचालन की रुपरेखा का बैठक में किया मंचन।

छोटी-छोटी बचत से किया पूंजी का सृजन,
बचत की इस राशि का जरुरत पर आबंटन।

अपेक्षानुसार राशि का आबंटन और देय तिथि पर भुगतान,
श्रेष्ठता का परिचय ही स्वयं सहायता समूह का प्रमाण।

जब समूह प्रगति के पथ पर आगे है बढ़ता,
बैंक लिंकेज कर लेने से बनी रहे धन की तरलता।

सामाजिक बुराई एवं कुरीतियां
गरीब के लिए है अभिशाप,
समूह बनाकर प्रगतिशील बहनें करती हैं
इनकी विदाई का जाप।

स्वयं सहायता समूह की एकता ही,
महिला सशक्तिकरण का है मंत्र,
लाख रुकावटें आएँ पथ पर,
समृद्धि की डगर होगी स्वतंत्र।

प्रेम रंजन
ग्राहक सेवा सहयोगी
राधानगर शाखा
भागलपुर अंचल

बैंक ऑफ़ इंडिया के संयोजन में कार्यरत विभिन्न नराकासों की छमाही बैठकों का आयोजन

नराकास (बैंक) नोएडा की छ:माही बैठक दिनांक 19.06.2024 के दौरान नराकास (बैंक) नोएडा की पत्रिका गौतमी का विमोचन । इस उपलक्ष्य में उपस्थित है भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2), गाज़ियाबाद के उप-निदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहेर, नराकास बैंक नोएडा के अध्यक्ष श्री अनुराग त्रिपाठी, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय से श्री अमरीश कुमार एवं नराकास (बैंक) नोएडा की सदस्य सचिव श्रीमती पूजा बडोला।

नराकास रत्नागिरी की छमाही बैठक जून, 2024 के दौरान दीप प्रज्ज्वलन करते हुए नराकास अध्यक्ष श्री नरेंद्र रघुनाथ देवरे एवं उनके साथ है गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (प.) की उप निदेशक डॉ सुस्मिता भट्टाचार्य, एनपीसीएल के अपर निर्माण अभियंता श्री आशुतोष शिवपुरे, कोंकण रेलवे के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री रविंद्र कांबले और सदस्य सचिव श्री रमेश गायकवाड।

नराकास नागपुर की छ:माही बैठक को संबोधित करते हुए नराकास अध्यक्ष श्री जय नारायन एवं मंच पर उपस्थित हैं गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (प.) की उप निदेशक डॉ. सुष्मिता भटटाचार्य एवं भारतीय रिज़र्व बैंक नागपुर के क्षेत्रीय निदेशक श्री सचिन वाई शेंडे।

नवनियुक्त राजभाषा अधिकारियों का प्रशिक्षण

हमारे बैंक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान नव नियुक्त राजभाषा अधिकारियों को माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक जी एवं कार्यपालक निदेशक श्री राजीव मिश्रा जी ने संबोधित करते हुए उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए प्रोत्साहित किया एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

हमारे बैंक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान नव नियुक्त राजभाषा अधिकारियों को प्रबंधन विकास संस्थान, बेलापुर, नवी मुंबई में प्रारंभिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। फोटो में नवनियुक्त राजभाषा अधिकारियों के साथ पहली पंक्ति में बाएँ से दाएँ श्री राजेश बुर्रा, रेसिडेंट अधिकारी, श्री मनीष कर राय, प्राचार्य, एमडीआई, सुश्री अंजलि भटनागर, महाप्रबंधक अध्ययन एवं विकास विभाग, सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, श्री एस. चन्द्रशेखर, सहायक महाप्रबंधक, संव्यवहार निगरानी विभाग, श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री अख्तर रसूल अंसारी, संकाय सदस्य।

माधुरी आर.
प्रबंधक- क्रेडिट
सीपीसी-बेलगावी
हुबबली-धारवाड़ अंचल

रचनात्मक कृतियों के सृजन का एहसास ऐसा होता है मानो आप उद्वेलित भावनाओं के भंवरजाल से जूझते हुए, सुरीली लहरों वाले सागर किनारे पर पहुँच रहे हो।